વૈદિક જ્યોતિષ સંસ્થાન (રજી.)

Reg. No. Bombay Public Trust Act Vide Registration No. E-26475 (Mumbai)

80G - Registration No. AABTV2655BF20228

121/44-D, Vishwakunj CHS., Sector-1, Charkop, Kandivali (W), Mumbai - 400 067.
Web. : www.vedicjyotishsansthanmumbai.com • Email : vjtvv1@gmail.com

ગુરુ પૂર્ણિમા મહોત્સવ Guru Purnima Mahotsav

SUNDAY 28TH JULY 2024

VEDIC JYOTISH SANSTHAN (REGD.)

Classes in Gujarati & Hindi Medium

Our Centers : Borivali (Sat.) • Malad (Sun.) • Borivali (Mon.)

भुवनेश्वरी

देवी भागवत में वर्णित मणिद्वीप की अधिष्ठात्री देवी हल्लेखा (ह्रीं) मन्त्र की स्वरुपा शक्ति और सृष्टि क्रम में महालक्ष्मी स्वरुपा - आदिशक्ति भगवती भुवनेश्वरी भगवान् शिवके समस्त लीला विलासकी सहचरी हैं। जगदम्बा भुवनेश्वरीका स्वरुप सौम्य और अंगकान्ति अरुण है। भक्तों को अभय और समस्त सिद्धियाँ प्रदान करना इनका स्वाभाविक गुण है। दशमहाविद्याओं में ये पाँचवें स्थान पर परिगणित हैं। देवीपुराण के अनुसार मूल प्रकृति का दूसरा नाम ही भुवनेश्वरी है। ईश्वर रात्रि में जब ईश्वर के जगद्रूप व्यवहारका लोप हो जाता है, उस समय केवल ब्रह्म अपनी अव्यक्त प्रकृति के साथ शेष रहता है, तब ईश्वररात्रि की अधिष्ठात्री देवी भुवनेश्वरी कहलाती है। अंकुश और पाश इनके मुख्य आयुध हैं। अंकुश नियन्त्रण का प्रतीक है और पाश राग अथवा आसक्तिका प्रतीक है। इस प्रकार सर्वरुपा मूल प्रकृति ही भुवनेश्वरी हैं, जो विश्व को वमन करने के कारण वामा शिवमयी होने से ज्येष्ठा तथा कर्म-नियंत्रण, फलदान और जीवों को दण्डित करने के कारण रौद्री कही जाती हैं। भगवान् शिव का वाम भाग ही भुवनेश्वरी कहलाता है। भुवनेश्वरी के संग से ही भुवनेश्वर सदाशिव को सर्वेश होने की योग्यता प्राप्त होती है।

महानिर्वाण तन्त्र के अनुसार संपूर्ण महाविद्याएँ भगवती भुवनेश्वरी की सेवा में सदा संलग्न रहती हैं। सात करोड़ महामन्त्र इनकी सदा आराधना करते हैं। दशमहाविद्याएँ ही दस सोपान हैं। काली तत्व से निर्गत होकर कमला तत्वतक की दस स्थितियाँ हैं, जिनसे अव्यक्त भुवनेश्वरी व्यक्त होकर ब्रह्माण्ड का रुप धारण कर सकती हैं तथा प्रलय में कमला से अर्थात् व्यक्त जगत्से क्रमशः लय होकर कालीरुप में मूल प्रकृति बन जाती हैं। इसलिये इन्हें काल की जन्मदात्री भी कहा जाता है।

दुर्गासप्तशती के ग्यारहवें अध्याय के मंगलाचरण में भी कहा गया है कि 'मैं भुवनेश्वरी देवी का ध्यान करता हूँ। उनके श्रीअंगों की शोभा प्रातःकाल के सूर्यदेव के समान अरुणाभ है। उनके मस्तक पर चन्द्रमा का मुकुट है। तीन नेत्रों से युक्त देवी के मुख पर मुस्कान की छटा छायी रहती है। उनके हाथों में पाश, अङ्कुश, वरद एवं अभय मुद्रा शोभा पाते हैं।

इस प्रकार बृहन्नीलतन्त्र की यह धारणा पुराणों के विवरणों से भी पुष्ट होती है कि प्रकारान्तर से काली और भुवनेशी दोनों में अभेद है। अव्यक्त प्रकृति भुवनेश्वरी ही रक्तवर्णा काली हैं । देवी भागवत के अनुसार दुर्गम नामक दैत्य के अत्याचार से संतप्त होकर देवताओं और ब्राह्मणों ने हिमालय पर सर्वकारण स्वरुपा भगवती भुवनेश्वरी की ही आराधना की थी । उनकी आराधना से प्रसन्न होकर भगवती भुवनेश्वरी तत्काल प्रकट हो गयीं। वे अपने हाथों में बाण, कमल-पुष्प तथा शाक-मूल लिये हुए थीं। उन्होंने अपने नेत्रों से अश्रुजल की सहस्त्रों धाराएँ प्रकट कीं । इस जल से भूमण्डल के सभी प्राणी तृप्त हो गये । समुद्रों तथा सरिताओं में अगाध जल भर गया और समस्त औषधियाँ सिंच गयीं। अपने हाथ में लिये गये शाकों और फल-मूल से प्राणियों का पोषण करने के कारण भगवती भुवनेश्वरी ही 'शताक्षी' तथा 'शाकम्भरी' नाम से विख्यात हुईं । इन्होनें ही दुर्गमासुरको युद्ध में मारकर उनके द्वारा अपहृत वेदों को देवताओं को पुनः सौपा था। उनके बाद भगवती भुवनेश्वरी का एक नाम दुर्गा प्रसिद्ध हुआ ।

भगवती भुवनेश्वरी की उपासना पुत्र-प्राप्ति के लिये विशेष फलप्रदा है। रुद्रयामल में इनका कवच, नीलसरस्वती तंत्र में इनका हृदय तथा महातंत्रार्णव में इनका सहस्त्रनाम संकलित है।

"बदऊ गुरू पद..."

पर्णानामर्थसंधानां रसानां छन्दसामपि । मंगलातां च कर्त्तारौ वन्दे वाणी विनायकौ ।।

शब्दों के अर्थ समूहों, छन्दों और मंगलों को करनेवाली श्री सरस्वतीजी और श्री गणेशजी को मैं वन्दन करती हूँ।

भारतीय धर्म परंपराओं में गुरु की महिमा श्रेष्ठ है। गुणवत्ता और श्रद्धा के विषय में भले ही देवतत्व प्रथम हो, और गुरुतत्व उसके बाद । किंतु गुरुत्व प्रत्यक्ष उपकारी होने के कारण गुरु को ही श्रेष्ठ स्थान दिया गया है । गुरु की सरल व सुंदर व्याख्या यह है कि - "जो ना करे किसी का बुरा, जिनके द्वारा आध्यात्म की यात्रा हो शुरु... वही गुरु है।"

सद्गुरु की सहाय के बिना हम ईश्वर तक नहीं पहुँच सकते । जो इन्सान गुरु से जुड़ा ना रहता हो, वह कभी भी ईश्वर से जुड़ा नही हो सकता है। किसी एक श्लोक में तो कहा गया है कि गुरु ही पृथ्वी पर का प्रत्यक्ष परमेश्वर है।

ज्योतिष विद्या के जिज्ञासु विद्यार्थीओं की प्रथम पसंदगी, जानी-मानी हमारी वैदिक ज्योतिष संस्थान (रजि.) सन २००१ से इस विषय में अपना सामाजिक दायित्व निभा रही है। यहाँ आप ज्योतिषशास्त्र, वास्तुशास्त्र, हस्तरेखा व स्वरज्ञान जैसे गूढ़ विषयों की अपनी प्यास बुझा सकते हो । आचार्य गुरुवर्य श्री अशोक गुरुजी ने शिष्य - शिक्षकों के साथ वृंद में इन गहन विषयों में ज्ञान की प्याऊ लगा रखी है।

धर्मज्ञो धर्मकर्ता च सदा धर्म परायण : । तत्वेभ्य: सर्वशास्त्रार्थदेशको गुरुरुच्यते ।।

धर्म को जानने वाले, धर्म अनुसार आचरण करने वाले, धर्म परायण और सभी शास्त्रों के अनुसार आदेश करने वाले को गुरु कहा जाता है।

देखते ही देखते आज हमारी वैदिक ज्योतिष संस्था अपने सोलहवें साल की गुरु पूर्णिमा समारोह उत्सव मना रही है। पुज्य आचार्य गुरुवर्य श्री अशोक गुरुजी को खूब साधुवाद व शत शत नमन । आपको एवं आपकी संस्था को सुनहरी सोलहवी सालगिराह की अनेकों शुभकामनाए।

श्री. हीरेन भावसार सरजी (के. पी. शास्त्रज्ञ व भूतपूर्व प्रिन्सीपल), श्री. प्रदीप जोशी सरजी (गणीतज्ञ) और श्री नीतिन भट्ट सरजी (दशा शास्त्रज्ञ) को अनेक उज्वल भविष्य और स्वस्थ खुशनुमा दीर्घायुष्य की शुभेच्छाओं का गुलदस्ता अर्पण करने का मौका चूकना नहीं चाहती । संस्था को आप जैसे विद्वानों के प्रति अहो भाव हमेशा बना रहेगा ।

आचार्य गुरुवर्य श्री अशोक गुरुजी तथा संस्था के सभी अध्यापक मित्रों को नत मस्तक वंदन ।

गुकारस्त्वन्धकारस्तु रुकार स्तेज उच्यते । अन्धकार निरोधत्वात् गुरुरित्यभि धीयते ।।

- गु . कार यानि अंधकार और रु. कार यानि तेज । जो अज्ञान रुपी अंधकारी को ज्ञान के प्रकाश से दूर करता हो, वही गुरु कहा जाता है।

- अस्तु

हरी ॐ

- वर्षा धीरज रावल

VEDIC JYOTISH SANSTHAN

Acharya Ashokji
President - Hon. Trustee
(Jyotishalankar)

Harilal Malde
Hon. Principal

Varsha Raval
Hon. Vice Principal

Jayesh Waghela
Hon. Lecturer

Pradip Joshi
Hon. Lecturer

Nitin I. Bhatt
Hon. Lecturer

Tejas Jain
Hon. Lecturer

Pramila Panchal
Hon. Lecturer

Priti Thakar
Hon. Lecturer

Dr. Himanshu Vyas
Hon. Lecturer

Vivek Shah
Hon. Lecturer

Rupal Damania
Hon. Lecturer

Swapnil Kotecha
Hon. Lecturer

Vikash Mishra
Hon. Lecturer

Himanshu R Oza
Hon. Lecturer

Anand Upadhyay
Hon. Lecturer

''हरी ॐ''

संस्था परिचय

वैदिक ज्योतिष संस्थान का मूल उदेस्य आज के आधुनिक युग मे ज्योतिष तथा वास्तु शास्त्र को पहले के जीतना ही आदर पात्र बनाना एंव ज्योतिष तथा वास्तु शास्त्र को जीवंत रखना तथा निस्वार्थ भावना से यह शास्त्रो का प्रचार व प्रसार करना है।

आज के युग मे यह ज्योतिष तथा वास्तु शास्त्र दोनो ही शास्त्रो को ऐसी निम्न कक्षा की गीनती पर लाकर खडा किया गया है की शास्त्र के रचयीताओ ने कल्पना भी नही की होगी ऐसी अवहेलना ईस युग मे हो रही है, लोग ज्योतिष तथा वास्तु शास्त्र मे विश्वास रखते ऐसा बताने मे भी जीजक अनुभव करने लगे है, लोग अपने को पिछडा समज लेगें यह डर रहता है, गुप्तता रखना चाहते है, शर्म का अनुभव करते है, आखीर क्यो ? क्योकि हम हमारी मूल संस्कृति से विमूख हो रहे है, संस्था लोगोके मानसपटल पर से उपरोक्त सारी झुठी गलत फहमी भेद-भरम तथा डरका निर्मूलन करने का निस्वार्थ प्रयास के साथ साथ लोगोको ज्योतिष तथा वास्तु शास्त्र के निर्मल ज्ञान प्रदान करने का ज्ञान यज्ञ चलाती है।

आज के युग में ज्योतिष तथा वास्तु शास्त्र से लोगो की आपेक्षा इस तरह बढ़ गई हे की जैसे आपकी समस्याओ का तुरंत निकाल, हाथो हाथ निकाल, तुरंत निवारण, लोगो को इन सारी अंधश्रद्धा से, पूर्वाग्रहो से बाहर लाना है । एलोपथी दवाई गोली लेते ही दर्द गायब, इस मानसिकता से लोगो को बाहर लाना है।

वैदिक ज्योतिष संस्थाने ज्योतिष तथा वास्तु शास्त्र का जो अभ्याषक्रम बनाया है वह वास्तव मे एक प्रकार के गणित की गणना तथा विज्ञान ही है, संस्था का यह अभ्याषक्रम पौराणीक द्रष्टांतो एवं उदाहरणो द्वारा अत्यंत सरल पद्धति से पढाया जाता है, यहा ज्योतिशास्त्र, वास्तुशास्त्र तथा स्वरज्ञान के विस्तृत अभ्याषक्रम ज्ञान दान की नि:शुल्क सेवा संस्था के मानद अध्यापको के द्वारा दी जाती है। किसी भी उम्र के ज्ञान पिपांसु एवं जीज्ञासु बंधु भगिनीयो को सहृदय आमंत्रण दीया जाता है। वर्षांत परिक्षाए लेकर प्रमाण पत्र दीया जाता है। यह शास्त्र हमे वेदो के द्वारा मिली हुई अमुल्य धरोहर है, वरदान है, न जाने हमारे भारत वर्ष के ऋषीमुनि योगीयो की कितने युगो युगो के परिश्रम का यह निचोड है इस अमृतरुपी रस का पान करे, ज्योतिष शब्द का अर्थ क्या है ? इस की ज्योत का प्रकाश इस प्रकाश के उजाले से स्वत: तथा लोगो के जीवन में उजाला लाना है।

मानद अध्यापकगण

श्री. आचार्य अशोकजी

श्री. हरिलाल मालदे, श्रीमती वर्षा रावल, श्री. जयेश वाघेला, श्री, प्रदिप जोशी, श्री. नितीन भट्ट, श्री. तेजश जैन, श्रीमती प्रमिला पंचाल, श्रीमती प्रीती ठाकर, डॉ. हिमांशु व्यास, श्री. विवेक शाह, श्रीमती रूपल दमणीया, श्री. स्वप्नील कोटेचा, श्री. विकास मिश्रा, श्री. हिमांशु ओझा, श्री. आनंद उपाध्याय

www.vedicjyotishsansthanmumbai.com

શ્રી નિરંજનભાઈ જોશી
૧-૧-૧૯૨૭ થી ૧૩-૧૦-૨૦૧૪

શ્રી ગુરૂવર્ય

સૌરાષ્ટ્રના પ્રખ્યાત કેળવણીકાર અને સુપ્રસિદ્ધ શ્રી ઈશ્વરલાલ કરશનજી જોશી અને લક્ષ્મીબહેનને ત્યાં તા. ૧-૧-૧૯૨૭ ના રોજ ડેડાણ ગામે અર્વાચીન યુગના જ્યોતિષ ભાસ્કર શ્રી નિરંજનભાઈનો દ્વિતીય પુત્ર તરીકે જન્મ થયો. જરૂરી શિક્ષણ ગુજરાતમાં પુરૂં કરી ૫૦ના દાયકામાં મુંબઈ આવી અર્થોપાર્જન માટે પ્રવૃત્તી શરૂ કરી અને સાથે સાથે જ્યોતિષવિદ્યાની સાધનાની શરૂઆત કરી. પિતાશ્રી શ્રી ઈશ્વરલાલભાઈના સિદ્ધાંતોને પોતાના જીવનમાં સ્થાન આપી નિર્ણય કર્યો કે ''જ્ઞાનની પરબ હોય, વિદ્યાનું વેચાણ નહીં'' અને સન ૧૯૫૬ માં ચોપાટી પર આવેલ મરીના મોર્ડન' સ્કૂલમાં જ્યોતિષ શાસ્ત્રના નિઃશુલ્ક વર્ગો શરૂ કર્યાં. એક જ ભાવના અને ખેવના સાથે કે ભણ્યા બાદ વિદ્યાર્થીઓ ધંધો કરશે તો પણ માર્ગદર્શક બનીને. પણ કમસેકમ લેભાગુ અને થરવાર્થી જ્યોતિષોની જેમ સમાજને ગેરમાર્ગે તો નહીં દોરે. ચાર દાયકાથી વધુ તેમણે કરેલા આ જ્ઞાનયજ્ઞમાં ૪૫,૦૦૦થી વધુ ભાઈબહેનો જેમાં સામાન્ય માનવીથી માંડીને વૈજ્ઞાનિક, ડોક્ટરો, વકીલો અને નિવૃત્ત ન્યાયાધીશોને જ્યોતિષ જાણતા અને માણતા

કર્યા. કોંક્રીટના જંગલ જેવા મુંબઈ શહેરમાં અઠવાડિયાના દરેક દિવસે કેન્દ્રમાં વર્ગ અને રવિવારે ત્રણ કેન્દ્રમાં વર્ગ જેમાં કામા હોલ, ગીરગામ, પ્રેમપુરી આશ્રમ, સાંતાક્રુઝ, મલાડ, બોરીવલી, માટુંગા, મુલુંડ અને ઘાટકોપર સામેલ હતાં.

જ્યોતિષશાસ્ત્રના પ્રસાર અને પ્રચાર માટે આજીવન ભેખ ધારી ૯-૯ કેન્દ્રમાં પોતે જ ભણાવેલ વિદ્યાર્થીઓના સાથ સહકાર લઈ યોગ્યતા પ્રમાણે અધ્યાપક નીમિને અવિરત જ્ઞાન પ્રસાર, પ્રચાર અને સમાજસેવા, માર્ગદર્શનનું જ્વલંત ઉદાહરણ કદાચ આવતા અનેક વરસો સુધી જોવા નહી મળે.

આજીવન નિઃસ્વાર્થ અને ભેખધારી નિષ્ઠાવાન વ્યક્તિત્વને શત શત વંદન.....

"संदेश"

वैदिक ज्योतिष संस्थान के अध्यक्ष श्री अशोक चौहाण गुरु पूर्णिमा महोत्सव के उपलक्ष्य में स्मरणिका का प्रकाशन कर रहे है। गुरु पुर्णिमा महोत्सव के दिन ज्योतिष्य के छात्रों को मेडल एवं सर्टीफिकेट प्रदान कीये जाएँगे। वैदिक ज्योतिष संस्थान का अपना ही एक विशेष स्थान है। यह स्मरणिका झील का पथ्थर साबित होगी। इसमे व्यवहारिक ज्ञान, ज्योतिष का होगा जोकी सरल शब्दो में आमजन तक पहुँचाया जायेगा। यह वास्तविक तथ्यों पर आधारित होगा।

हम आशा करते हैं कि इस स्मरणिका के माध्यम से ज्योतिष के विद्यार्थी अपनी बहु आयामी प्रतिभा प्रदर्शित करने के लिए आगे आऐंगे।

स्मारिका के सफल प्रकाशन तथा वैदिक ज्योतिष संस्थान के उज्वल भविष्य के लिए ढेर सारी शुभकामनाए।

हमे खुशी है की वैदिक ज्योतिष संस्थान द्वारा जनमानस में ज्योतिष को लेकर फैल रही भ्रांतिओं को दूर किया जा सके। हम इसकी सफलता हेतु अपनी हार्दिक शुभकामनाए प्रेषित करते है।

हीरेन भावसार - पूर्व प्रिंसिपल
प्रदिप जोशि - पूर्व व्याख्याता
नितिन भट्ट - पूर्व व्याख्याता

મુખ્ય મહેમાન

નામ : વિશ્વજીત બલદેવપ્રસાદ રાવલ

જન્મ તારીખ : ૧૦ - ૦૧ - ૧૯૪૯ - અમદાવાદ

અભ્યાસ : એમ એસ સી, ઑરગૅનિક કેમિસ્ટ્રી, એમ. એસ. પેટ્રોલીયમ એન્જી.

જ્યોતિષ ક્ષેત્રે : ૧૯૮૫ થી પંચાગ કર્તા

અનુભવ : શ્રી સિમન્ધર સ્વામિ પંચાગ કર્તા, ૧૯૮૫ થી ઈ. સ. ૨૦૦૫ સુધી પંચાંગ

જન્મભૂમિમાં રાશિ ભવિષ્ય, ૨૦૦૬ - ૦૭ થી ચાલુ સંદેશ પંચાંગમાં શાસ્ત્રાર્થ અને પંચાંગ ગણિત ૨૦૧૪ થી ૨૦૨૩ સુધી , ૨૦૧૪ થી હરિલાલ પ્રેસના ગણિત શાસ્ત્રાર્થ કર્તા એટલે ૧૯૮૫ થી આજ સુધી પંચાંગથી સંકળાયેલા છે. દેશના મોટા ભાગના પ્રદેશોથી સંકળાયેલ છે. જૈન સમાજ સાથેના નાતો વધારે છે. દરેક ધર્મ સાથે સંકળાયેલ છે.

આ ક્ષેત્રમાં પ્રેવેશતા પહેલા અમારી સાત પેઢીમાંથી કોઈ પ્રવેશ્યું નથી. પહેલા હું પણ કર્મવાદમાં જ માનનારો હતો. પણ કુદરતે કોઈક કારણ બનાવ્યું ને અજાણતા આ ક્ષેત્રમાં પ્રવેશ કર્યો. લગ્ન માટે ૩-૩ વખત અમેરીકા - કેનેડા થી ભારત આવ્યો. ગુજરાતના નામાંકિત જ્યોતિષીઓના વાયદા ખોટા પડ્યા. પછી મને વિચાર આવ્યો કે કુંડળી સાચી છે કે ખોટી. તો જાતે ગણિત કરીને કુંડળી બનાવી. એક જ સરખી કુંડળી આવી. પછીએ થયું કે ફલાદેશમાં કઈંક તકલીફ હશે. માટે પુસ્તકો ઉથલાવીને ફળાદેશમાં પદાપર્ણ કર્યું.

મારો મૂળ વિષય તો ફળાદેશ હતો. છતાં જૈન સાધુઓના સંપર્કમાં આવીને ઇ. સ. ૧૯૮૪ - ૮૫ માં પહેલી બખત રાશિ ભવિષ્ય લખ્યું અને બધેથી વખાણ થતા ગયા. ૨૨ વર્ષ રાશિ ભવિષ્ય અને સંપાદક તરીકે કામ કર્યું. છેલ્લે થોડાક મતભેદ થતાં સંપાદકમાથી નિવૃત્તિ લીધી અને જન્મભુમિના સંપાદક શ્રી જયોતિબેન ભટ્ટને ખબર પડી. તેમણે તરત જ મારો ફોનથી સંપર્ક કર્યો. ત્યારે શ્રી જમનાદાસભાઈ એકદમ બિમાર હતા. મેં સંમતી આપી, અને તેઓ ગુજરી ગયા. મને ઘણો આઘાત લાગ્યો ત્યારથી આજ સુધી જન્મભૂમિ પંચાગ સાથે સંકળાયેલો છું.

સંદેશના ગણિત કર્તા અને શાસ્ત્રાર્થકર્તા શ્રી ઈન્દુવદનભાઈ ત્રિવેદીના સંસર્ગમાં હોવાથી તેમણે જ મને સંદેશ પંચાગના ગણિત શાસ્ત્રાર્થકર્તા બનાવ્યા હતા. લગભગ આશરે ૧૦ વર્ષ સુધી સુંદર સાથ નિભાવ્યો વળી વિચાર ભેદ ઊભા થયા અને અચાનક જ રાજીનામું આપી દીધું.

રાજકોટ થી નિકળતા હરિલાલ પ્રેસના પણ ગણિત શાસ્ત્રમાં કામ કર્યું હતું અને હજુ કરુ છુ. મારૂ વાંચન અને ગ્રહણ શકિત સારા હોવાથી આગળ વધતો ગયો અને આજે આપના સમક્ષ ઉપસ્થિત છુ.

લગભગ ૪૦ વર્ષ ઉપરનો મારો અભ્યાસ છે. અને ઘણા બધાના સંપર્કોએ મને આ તક આપી છે માટે દરેક સ્વજનનો હું આભારી છું.

શ્રીમતી સ્મિતાબેન આર. પારકર અનાવીલ બ્રાહ્મણ કુટુંબમાંથી આવેલ છે. એમણે એમ.એ. તથા M.Ed. કરેલ છે. તેમના જીવનનો મુદ્રાલેખ છે કે શાળા એ મંદિર છે તથા શિક્ષણ આપવું જે પુજા-આરાધના છે. તેઓ લગભગ ૧૮ વર્ષ સુધી શિક્ષિકા તરીકે સેવા આપી ચુક્યા છે. વિધાર્થીઓને માર્ગદર્શન આપી એમને આગળ વધતા જોઈ ગર્વ અનુભવે છે, એમનું જીવન ધ્યેય છે કે દેશનું દરેક બાળક-બાલિકા શિક્ષિત હોય, શિક્ષણનો પ્રકાશ સર્વત્ર ફેલાય, શિક્ષા ક્ષેત્રે ૧૮ વર્ષની સેવા આપ્યા બાદ તેઓ સરકારના એજ્યુકેશન ઈન્સ્પેક્ટર (શિક્ષણ ક્ષેત્રે તપાસકર્તા) તરીકે ૬ વર્ષ સેવા આપી, આ દરમ્યાન તેઓને વિધાર્થીઓની સમસ્યાઓનો સારો એવો અનુભવ થયો અને તેમની ઉત્કૃષ્ઠ સેવા તથા અનુભવને કારણે સરકાર દ્વારા મોટી જવાબદારી આપવામાં આવી જે (શિક્ષણ વ્યવસ્થા) એજ્યુકેશન સુપરીટેન્ડન્ટ તરીકેની હતી. અહીં તેમણે પોતાની કાર્ય સાધકતા, કાર્ય સમતા, સમર્થતાનો ઉત્કૃષ્ઠ પરિચય આપ્યા બાદ નિવૃત્ત થયા, પરંતુ બીજા લોકોની જેમ નિવૃત્તિ બાદ શાંત બેસવું એમના સ્વભાવમાં ન હોવાને કારણે તેઓ સ્વામિનારાયણ સંપ્રદાયના મહિલા વિભાગમાં કાર્યરત રહે છે. તે ઉપરાંત તેઓ કુમારીકાઓ તથા યુવતીઓના સુધારા, પ્રગતી, શિક્ષણના લાભાર્થે કાર્ય કરનારી સંસ્થાના પ્રમુખ પદની જવાબદારી પણ સંભાળે છે. વેદિક જ્યોતિષ સંસ્થા તેમની આ સેવામય સફરમાં હંમેશા આગળ વધવાની શુભેચ્છા આપે છે અને ઈશ્વર તેમને આ કાર્યમાં હંમેશા આગળ વધવાની શક્તિ પ્રદાન કરે અને આપણી સંસ્થાના ગુરૂપૂર્ણિમા સમારોહના માનવંતા મહેમાન બનવાનું આમંત્રણ સ્વિકારવા બદલ આભાર વ્યક્ત કરે છે.

।। ईश्वर जो कुछ करता है, अच्छा ही करता है ।।

अकबर बादशाह के साथ कुछ भी अच्छा या बुरा होता था, तो बीरबल हर बार बोलता था, ईश्वर जो कुछ भी करता है अच्छा ही करता है । एक बार अकबर की पत्नी बीमार हुई तो बीरबल बोला ईश्वर जो कुछ भी करता है अच्छा ही करता है ।

अकबर को गुस्सा आया किंतु वह कुछ नहीं बोला । थोड़े दिन बाद अब अकबर के बेटे को पांव में लग गया । फिर बीरबल बोला ईश्वर जो कुछ भी करता है अच्छा ही करता है । अकबर बादशाह को ज्यादा गुस्सा आया फिर भी वह चुप रहा । अंतः अकबर बादशाह की उंगली तलवार से कट गई फिर से बीरबल बोला ईश्वर जो कुछ भी करता है अच्छा ही करता है । अब अकबर से सहन नहीं हुआ। उसने बीरबल को जेल में डाल दिया । थोड़े दिन बाद अकबर राजा सैन्य के साथ जंगल में शिकार करने निकले । हिरेन के पीछे अकबर बादशाह आगे निकल गए और सैन्य पीछे छूट गया । अकबर बादशाह थक कर एक वृक्ष के नीचे सो गये थे तभी भील आदिवासी आए और अकबर को पकड़के लेकर गए । आदिवासी के पुजारी ने देखा तो उसने ना बोल दिया क्योंकि अकबर की उंगली कटी हुई थी उसने कहा इसकी तो बलि पहले से चढ़ी हुई है इसलिए देवी को यह बलि नहीं चढ़ाई जा सकती । अकबर बादशाह को छोड़ दिया।

वह दौड़ते - दौड़ते राज्य में आया और बीरबल को जेल से निकाल के अपने पास बुलाया । अकबर बादशाह ने कहा बीरबल तू कहता था वह बात सच निकली । ईश्वर जो कुछ भी करता है, अच्छा ही करता है। किंतु मुझे यह समझ में नहीं आया कि तुझे तो जेल में डाला गया तेरे साथ क्या अच्छा हुआ ।

बीरबल ने कहा जहांपना मै हर बार आपके साथ रहता हूं । आपके साथ आदिवासी लोग मुझे भी पकड़ के लेकर गए होते । आपकी तो उंगली कटी हुई थी इसलिए आपको छोड़ देते और मेरी बलि चढ़ जाती इसलिए मैं जेल में था तो भी ईश्वर जो कुछ भी करता है, अच्छे के लिए करता है, मानव तु परिवर्तन से काहे को डरता है।

- निकुंज सेठ

Well Wishers

Dilip N. Gala

Jayesh Desai
Souvenir Editor

Apurva R. Parekh
Web Adviser

Kiran Shah

Nilay Chaubal
Web Designer

Purna Vyas
Astronomy Team

Kunal Vora
Astronomy Team

Vivek Patil
Astronomy Team

Umesh Bhatta

Parth Pandya

Ronak Trivedi

Viral Mehta

Kamlesh Gandhi

VEDIC JYOTISH SANSTHAN

Winner of the Silver Medal for Excellence

VANDANA S. MISHRA
Vedic Hastrekha Vignata
1st Year

KEDARNATH K. MODI
Vedic Jyotish Pravesh
1st Year

JAYSING A. KHAMKAR
Vedic Vastu Pravesh
1st Year

NIRMALA K. VYAS
Vedic Jyotish Bhushan
2nd Year

KHYATI K. VORA
Vedic Vastu Bhushan
2nd Year

NEETA M. KHATRI
Vedic Jyotish Martand
3rd Yr.

NEETA D. MAHYAVANSHI
Vedic Swargyan Gnyata
Vedic Nibandh Spardha 2024

ત્રણ વાતને યાદ રાખશો નહિં - તમારૂં કો'કે કરેલું અપમાન, તમે કરેલો ઉપકાર અને બીજાના દુર્ગુણો.

VEDIC JYOTISH SANSTHAN

OUR ARDENT STUDENTS - FIRST YEAR - SATURDAY

Ajay S. Parmar

Amishi R. Doshi

Anil J. Pathak

Anita J. Dodia

Bhagirath H. Nagar

Bhavtik C. Vora

Chirag R. Mehta

Deepak V. Raval

Dhiren D. Chheda

Dipti S. Doshi

Hetal S. Gala

Hiral R. Ajmera

Manoj A. Mehta

Milan M. Shah

Nirav J. Marchant

Nipa U. Chhaya

બધી જ કલાઓમાં જીવન જીવવાની કલા બેસ્ટ છે, સારી રીતે જીવી જાણે એ જ સાચો કલાકાર.

VEDIC JYOTISH SANSTHAN

OUR ARDENT STUDENTS - FIRST YEAR - SATURDAY

Parul M. Patel

Rinku K. Chauhan

Rohit R. Pathak

Rupal N. Doshi

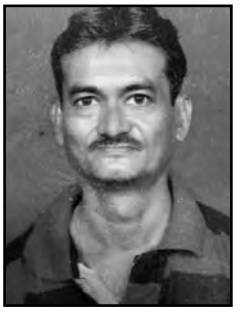

Sunil G. Danduliya

Sonal Shah

Varsha N. Sutarya

Vinod R. Sidhpura

Zalak A. Limbachiya

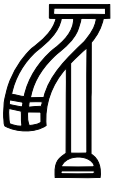

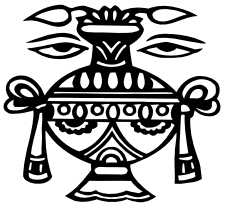

ॐ
महामंत्र

VEDIC JYOTISH SANSTHAN

OUR ARDENT STUDENTS - SECOND YEAR - SATURDAY

Bhavik J. Sanchala

Chhaya V. Chheda

Daxa V. Katelia

Devang B. Damani

Disha D. Mandavia

Gaurav A. Desai

Gunjan R. Sachdev

Hetal B. Gohil

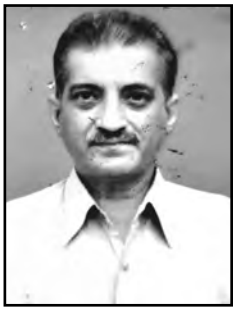

Himanshu B. Vyas

Hitesh D. Jogi

Jigna J. Vora

Jinal S. Trivedi

Jitendra K. Panchal

Kajal A. Thakkar

Ketaki B. Gala

Krunnal C. Parmar

VEDIC JYOTISH SANSTHAN

OUR ARDENT STUDENTS - SECOND YEAR - SATURDAY

Madhavi D. Kapse

Mamta D. Kamdar

Mayurika A. Sukla

Nilam B. Sanchala

Rina Shaah

Vishakha C. Vadia

Jignasha N. Parikh

Pavankumar V. Sahal

Pourush B. Gutta

Chhaya P. Shah

Yashvi Panchal

Bhadresh K. Shah

Rita N. Shah

દુઃખમાં પણ પ્રેમ હોય તો માણસ સુખેથી જીવી શકે છે.

VEDIC JYOTISH SANSTHAN

OUR ARDENT STUDENTS - 3RD YEAR - SATURDAY

Alpa R. Shah

Amita D. Parekh

Bimal P. Rasputra

Chetana H. Parmar

Heena C. Chheda

Kavita R. Shah

Khyati K. Vora

Neha M. Shah

Niyati B. Mehta

Pooja M. Bhayani

Pooja M. Vora

Priti F. Shah

Riddhi S. Savla

Snehal V. Shah

Sonal N. Chikani

Urvashi S. Gajjar

VEDIC JYOTISH SANSTHAN

OUR ARDENT STUDENTS - 3RD YEAR - SATURDAY

Meena N. Shah

Varsha H. Joshi

Vijay P. Jagad

OUR ARDENT STUDENTS - SATURDAY SW 2024

Anand V. Soni

Bhagwandas N. Mehta

Meena V. Anand

Nayna S. Mehta

Neeta M. Khatri

Rakesh K. Panchal

Shilpa S. Parab

Trupti H. Parekh

Jinesh M. Shah

VEDIC JYOTISH SANSTHAN

OUR ARDENT STUDENTS - FIRST YEAR - MALAD

Deepak K. Raval

Hena V. Vadgama

Jalpa K. Dave

Jasmina H. Shah

Jayshri V. Gala

Jinal B. Joshi

Kalpesh G. Dave

Nishit J. Parekh

Payal T. Soni

Payal V. Parmar

Pravinkumar D. Dholakia

Reshma D. Shah

Ritesh M. Shah

Vikash P. Vadgama

Vilas R. Parmar

Naresh B. Parmar

ત્રણ વાતને યાદ રાખશો નહિં - તમારૂં કો'કે કરેલું અપમાન, તમે કરેલો ઉપકાર અને બીજાના દુર્ગુણો.

VEDIC JYOTISH SANSTHAN

OUR ARDENT STUDENTS - FIRST YEAR - MALAD

Hemant C. Shah

Rupesh S. Doshi

OUR ARDENT STUDENTS - SECOND YEAR - MALAD

Alka R. Varde

Amita M. Naik

Anisha M. Soni

Anita M. Dhakan

Deven D. Shah

Dhanraj P. Bhadark

Gauri R. Vishwakarma

Jatin R. Desai

Jigar D. Jogi

Jinesh D. Kantharia

Kaushik N. Dave

Krupa M. Utekar

VEDIC JYOTISH SANSTHAN

OUR ARDENT STUDENTS - SECOND YEAR - MALAD

Leena J. Ravani

Maheshkumar D. Parmar

Mohit A. Shah

Nikhil J. Kothari

Nutan I. Shah

Rajen R. Vyas

Sarika R. Soni

Smita S. Mer

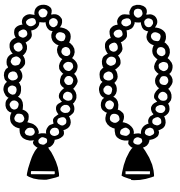

Urmish P. Desai

Viral V. Shah

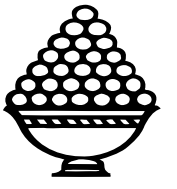

પરમાત્માની નજીક રહો, પરમાત્માને ન માનનારાથી દુર રહો.

VEDIC JYOTISH SANSTHAN

OUR ARDENT STUDENTS -THIRD YEAR - MALAD

Avinash B. Bhagalia

Himanshu J. Joshi

Indira S. Acharya

Jay M. Joshi

Kshitij B. Dave

Kalpita J. Joshi

Hetal M. Modi

Sonal G. Joshi

Shivam H. Joshi

Neeta D. Mahyavanshi

Yogesh B. Popat

OUR ARDENT STUDENTS - MALAD SW 2024

Yogesh U. Khatri

Deepa A. Joshi

Prashant D. Badheka

Amish M. Sheth

VEDIC JYOTISH SANSTHAN

OUR ARDENT STUDENTS - FIRST YEAR - MALAD (HINDI)

Akhilesh B. Vishwakarma

Amit P. Rita

Anand B. Dubey

Anju R. Tailor

Arjun R. Katwa

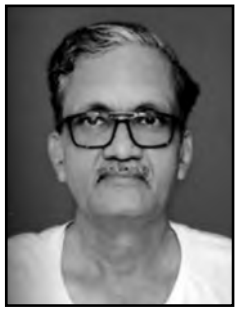

Balmukund D. Dagha

Bhuvanesh A. Satam

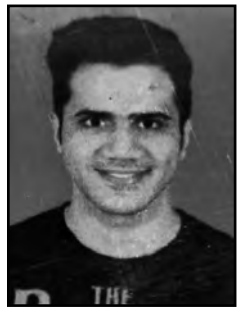

Chirag R. Thakkar

Dhaval D. Rajgor

Dhaval H. Lakhani

Dipen P. Sheth

Gajanan B. Kulkarni

Gautam C. Dave

Gowri B. Khandare

Harikesh L. Pathak

Hasti D. Lakhani

બધી જ કલાઓમાં જીવન જીવવાની કલા બેસ્ટ છે, સારી રીતે જીવી જાણે એ જ સાચો કલાકાર.

VEDIC JYOTISH SANSTHAN

OUR ARDENT STUDENTS - FIRST YEAR - MALAD (HINDI)

Honey N. Gala

Kavita R. Jagtap

Keshwanand B. Mishra

Keval A. Bhanushali

Krisna D. Hirode

Malini S. Pallai

Mamta H. Mehta

Meena R. Shukla

Minu Jain

Naresh Panchal

Neeta R. Dudani

Neeta S. Gala

Nilam S. Shinde

Padmini N. Naidu

Radhika D. Sheth

Raghvendra A. Mishra

VEDIC JYOTISH SANSTHAN

OUR ARDENT STUDENTS - FIRST YEAR - MALAD (HINDI)

Rajeshkumar G. Mishra

Rajkumari H. Sharma

Rupa V. Shah

Sapna M. Thakur

Sarang B. Damudre

Subhangi S. Mandolkaer

Urmila M. Kochikar

Urvashi Y. Thakkar

Vanshika A. Tomar

Venktesh Subramaniam

Vinayak K. Nawale

Swara T. Ambekar

Santosh R. Baniya

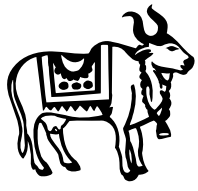

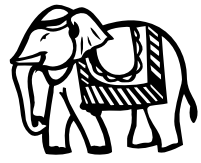

સ્નાનથી તન, દાનથી ધન, સહનશીલતાથી મન અને ઈમાનદારીથી જીવન શુદ્ધ બને છે.

VEDIC JYOTISH SANSTHAN

OUR ARDENT STUDENTS - SECOND YEAR - MALAD (HINDI)

Arvind R. Yadav

Gulshan D. Mehra

Hariom Sukla

Hemraj P. Zaware

Hrithik R. Jain

Jaysing A. Khamkar

Kedarnath K. Modi

Madhavi V. Borhade

Manjushri A. Sharma

Meena Y. Gowda

Palak K. Shroff

Rajiv M. Bansal

Sanskruti S. Gole

Shivani R. Oberoi

Swatantrakumar Mishra

Sweta S. Soni

VEDIC JYOTISH SANSTHAN

OUR ARDENT STUDENTS - SECOND YEAR - MALAD (HINDI)

Vandana S. Mishra

Vinod Kumaran

Vinod R. Teli

Vijayan Nambiar

OUR ARDENT STUDENTS - THIRD YEAR - MALAD (HINDI)

Deepak N. Rane

Kudimal J. Modi

Lata J. Jain

Mamta R. Sharma

Nirmala K. Vyas

Poonam G. Jain

Poonam O. Yadav

Radhesyam G. Kumavat

Sarda R. Kumavat

Sheela V. Katheeh

Sony R. Chimnani

VEDIC JYOTISH SANSTHAN

OUR ARDENT STUDENTS - FIRST YEAR - MONDAY

Chitra B. Damani

Dharmi C. Shah

Divya A. Shah

Foram M. Gala

Jayati H. Karia

Jyotsana R. Patel

Kashyap M. Parmar

Krupal P. Mehta

Madhvi D. Joshi

Neha H. Kapadia

Neha M. Shah

Parinda R. Mehta

Hitesh K. Pithadia

Dina J. Vira

VEDIC JYOTISH SANSTHAN

OUR ARDENT STUDENTS - SECOND YEAR - MONDAY

Hemlata H. Mudliar

Keval H. Shah

Rohit R. Pathak

Viral B. Gandhi

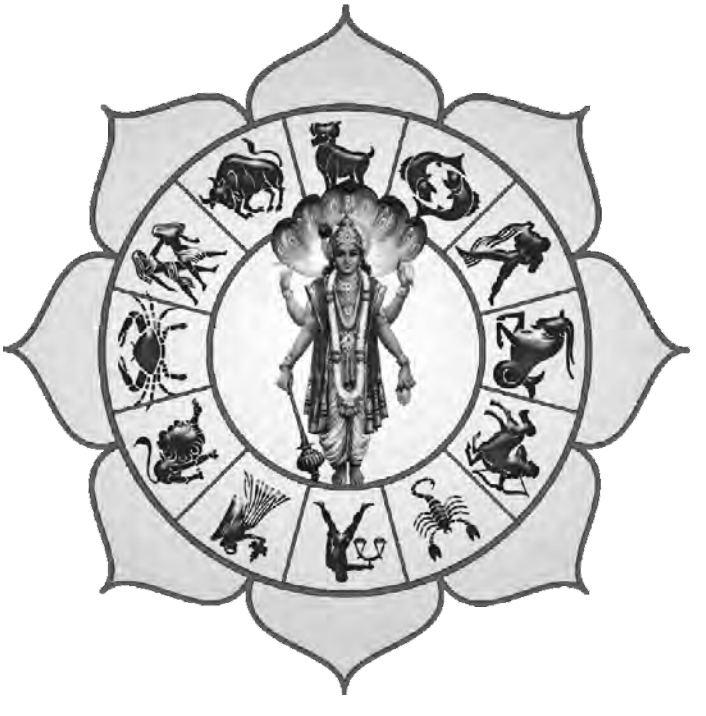

VEDIC JYOTISH SANSTHAN

OUR ARDENT PASS STUDENT - 2023

Amar S. Uapdhyay

Bhamini I. Bhatt

Binita P. Thakkar

Chetan B. Gadhiya

Dharmaveer T. Gupta

Dharmesh D. Dave

Dharmessh Desai

Gaurav U. Sharma

Indira M. Gupta

Kudimal J. Modi

Leena A. Sharma

Maitri R. Kenia

Megha A. Shah

Paru J. Purohit

Piyush K. Savla

Praful P. Seta

ત્રણ વાતને યાદ રાખશો નહિં - તમારૂં કોઁકે કરેલું અપમાન, તમે કરેલો ઉપકાર અને બીજાના દુર્ગુણો.

VEDIC JYOTISH SANSTHAN

OUR ARDENT PASS STUDENT - 2023

Pragna A. Sheth

Prakash M. Shinde

Prashant D. Badheka

Premal P. Soni

Raj R. Makhija

Rakesh B. Sawlani

Rakesh Kumar Singh

Ramesh M. Ashar

Sanket A. Garg

Sonal D. Oza

Trisha R. Singh

Umasankar H. Pandya

ત્રણ વાતને યાદ રાખશો નહિં - તમારૂં કોઁકે કરેલું અપમાન, તમે કરેલો ઉપકાર અને બીજાના દુર્ગુણો.

VEDIC JYOTISH SANSTHAN

વૈદિક જ્યોતિષ સંસ્થાન (રજીસ્ટર્ડ)

રજી. પત્રવ્યવહારનું સરનામું :
૧૨૧/૪૪ ડી, વિશ્વકુંજ સોસાયટી, સેક્ટર ૧, ચારકોપ, કાંદીવલી (વેસ્ટ), મુંબઈ-૪૦૦ ૦૬૭.
મોબાઈલ : ૯૩૨૨૨૬૧૭૦૯ / ૭૦૪૫૪૭૦૬૬૧ • ઈમેલ : vjtvv1@gmail.com

જ્યોતિષના નિઃશુલ્ક વર્ગો

ગુજરાતી માધ્યમમાં હસ્તરેખા, જ્યોતિષ, વાસ્તુ અને સ્વરજ્ઞાનના વર્ગોમાં પ્રવેશ
જાન્યુઆરી થી બોરીવલી અને મલાડ ખાતે

ગુજરાતી અને હિન્દી

૧. પ્રથમ વર્ષ- **વૈદિક જ્યોતિષ પ્રવેશ.**

૨. દ્વિતીય વર્ષ- **વૈદિક જ્યોતિર્ભૂષણ.**

૧. પ્રથમ વર્ષ- **વૈદિક વાસ્તુપ્રવેશ**

૧. **વૈદિક સ્વરજ્ઞાન જ્ઞાતા**

૧. પ્રથમ વર્ષ- **વૈદિક હસ્તરેખા વિજ્ઞાતા**

૩. તૃતિય વર્ષ- **વૈદિક જ્યોતિષમાર્તંડ**

૨. દ્વિતીય વર્ષ- **વૈદિક વાસ્તુભૂષણ**

૪. ચતુર્થ વર્ષ- **સ્વાધ્યાય**

નોંધ :
ભાષાનું જ્ઞાન ધરાવતા કોઈ પણ ઉમરના ભાઈઓ તથા બહેનો પ્રવેશ મેળવી શકે છે.

શાસ્ત્રમાં જ્ઞાન દાનને શ્રેષ્ઠ દાન કહેવાયું છે જે આ સંસ્થાનું એકમાત્ર ધ્યેય છે.

સાહસ ગયું તો સમજી લેવું કે માણસની અડધી સમજદારી પણ ગઈ.

We are grateful to the Trustees, Committee and Management of the following Institutions for permitting us to utilize their premises for conducting our classes.

1. **Sheth M.K.E.S. English High School, Malad (W)**
2. **Anandibai Kale Vidyalay, Borivali (W)**

We are grateful to the Newspaper and advertisers for their best co-operation and support.

- ★ **Janmabhoomi**
- ★ **Mumbai Samachar**
- ★ **Gujarat Samachar**
- ★ **Nav Bharat Times Hindi**

(ॐ) मंगला चरण (ॐ)

॥ श्रवण के आरंभ का मंगलाचरण ॥

ॐ सत्यं ज्ञानमनंतं यन्निष्कलं निष्क्रियं परम् ।
अद्वितीयं निर्विशेषं ब्रह्म तत्समुपास्महे ॥१॥

वह जो सत्यरुप, ज्ञानरुप, अनंत, प्राणादि कलाओसे रहित माया से रहित सूक्ष्म और व्यापक, द्वैत्य से रहित और नामादि विशेष से रहित ब्रह्म है, उनका हम अच्छी तरह से ध्यान करते हैं। (१)

शंकरं शंकाराचार्य केशवं बादरायणम् ।
सूत्रभाष्य कृतौ वन्दे भगवन्तौ पुनः पुनः ॥२॥

विष्णुरुप भगवान व्यास और महेश्वररुप श्री शंकराचार्य जो ब्रह्मसूत्र के शारीरिक भाष्य के कर्ता है, वह अैश्वर्यादिवाले दोनों को मैं बार बार नमन करता हूँ।(२)

अज्ञान तिमिरांधस्य ज्ञानांजनशलाक्या।
चक्षुरुमीलितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥३॥

अज्ञानरुप अंधकारसे अँधे बने हुए की अंत:करणरुप आँखे जिन्होंने अंजन की सलाई द्वारा खोली वह श्री गुरु को मेरे प्रणाम हो। (३)

ब्रह्मानन्दं परमसुखदं केवलं ज्ञानमूर्ति,
द्वंदातितं गगनसदृश्यं तत्त्वमस्यादिलक्ष्यम् ।
ऐकं नित्यं विमलचलं सर्वधीसाक्षीभूतं,
भावातीतं त्रिगुणरहितं सद्गुरुंतं नमामि ॥४॥

वह जो ब्रह्मरुप आनंदवाले, शिष्यों को परमसुख देनेवाले, अविद्या से रहित, ज्ञानरुप, सर्व द्वंद्वोसे पर, गगन जैसे निर्लेप वह आप है, इत्यादि महावाक्यों के लक्ष्यार्थरुप, एक तीनों कालमें रहनेवाले, सर्व प्रकार की अशुद्धि से रहित, चलायमान से रहित, सब प्राणीओं की बुद्धि के साक्षीरुप, छह प्रकार के भावविकारों से मुक्त एवम् तीन गुणो से रहित है, वह सद्गुरु को मैं वंदन करता हूँ।

समाप्ति मंगलाचरण

॥ श्रवण के समाप्ति का मंगलाचरण ॥

नमस्ते सते ते जगत्कारणाय, नमस्ते चिते सर्वलोकाश्रयाय ।
नमोद्वैततत्वाय मुक्तिप्रदाय, नमो ब्रह्मणे व्यापिने शाश्वताय ॥१॥

सत्यरुप आपको प्रणाम, जगत के कारणरुप आपको प्रणाम, ज्ञानस्वरुप और सर्व लोक के आश्रयरुप ऐसे आपको प्रणाम, अद्वैत तत्वरुप को मोक्ष देनेवाले को प्रणाम, व्यापक और शाश्वत ब्रह्म को प्रणाम। (१)

त्वमेकं शरण्यं त्वमेकं वरेण्यं, त्वमेकं जगत्पालकं स्वप्रकाशम् ।
त्वमेकंजगत्कर्तृपार्तृप्रहर्तृ, त्वमेकं परं निश्चलं निर्विकल्पम् ॥२॥

एक आप शरण ग्रहण करने योग्य हो, एक आप श्रेष्ठ हो, एक आप संसार को पालनेवाले तथा स्वयं प्रकाश हो, एक आप मायासे पर, अचल और सर्व विकल्पो से रहित हो।(२)

भयानां भयं भीषणं भीषणानाम्, गतिः प्राणानां पावनं पावनानाम्।
महोच्चैः पदानां नियन्तृ त्वमेकं, परेषां परं रक्षणं रक्षणानाम् ॥३॥

भय उत्पन्न करनेवालों के भयरुप, भयंकरों के बचकररुप, सर्व प्राणीओं की गतिरुप, पवित्र बनाने वालों को पवित्र बनाने वाले, एक आप उच्च पदो में रहनेवालों को नियम सें रखनेवाले, आकाशादि पर रहनेवालों से पर रहनेवाले और रक्षा करनेवालों की रक्षा करनेवाले हैं । (३)

श्रुतिस्मृतिपुराणानामालयं करुणालयम् ।
नमामि भगवत्पादं शंकरं लोकशंकरम् ॥४॥

श्रुति स्मृतिको पुराणों के रुप को और ध्याना के भी घररुप और लोगों का कल्याण करनेवाले, जिनके चरणों में अैश्वर्यादि रहे है ऐसे श्री शंकराचार्य को मै वंदन करता हूँ । (४)

नक्षत्र ज्ञान माला

अश्विनि भरणी पद चार
कृतिका एक चरण है मेष ।
कृतिका तिन रोहिण्ये चार
दो पद मृग वृषभ विचार ।
मृग दो पद आर्द्रा चार
तिन पुर्नवसू मिथुन विचार ।
एक पुर्नवसू पूष्य श्लेष
जानिये कर्कट राशि विषेश ।
मधा पूर्वा उत्तरा पद एक
सिंह राशिका करो विवेक ।
उत्तरा तिन सकल पद हस्त
दो पद चित्रा कन्या जानो ।
दो पद चित्रा स्वाति चार
तिन विशाखा पद है तुल ।
एक विशाखा अनुराधा चार
ज्येष्ठा पूर्ण है वृश्चिक विचार ।
मूल पूर्वा उत्तरा पद एक
धनु राशिका करो विवेक ।
उत्तरा तिन श्रवण पद चार
दो धनिष्ठा मकर विभेद ।
दो धनिष्ठा शतभिष चार
पूर्वा तिन पद कुम्भं निर्धार ।
पूर्वा एक उत्तरा चार
सकल रेवति मीन विचार ।

तिथि दोहा

प्रतिपदा एकादशी षष्ठी नन्दा जान।
दूज सप्तमी द्वादशी भद्रा मान।
तृतीया अष्टमी त्रयोदशी जया जान।
चौदशी चौथ नवमी येतो है रिक्ता मान।
पंचदशी पंचमी तथा दशमी है पूर्णा मान।
सब तिथियोके नाम सम जानो फल परिणाम।

वैदिक ज्योतिष संस्थान की ९६वी गुरुपूर्णिमा के अवसर पर पंच पक्षी फलकथन की एक अनोखी पध्दती पर विचार

यह पद्धती का प्रचलन भारतवर्ष के तमिलनाडु में अधिक देखा गया है । यहाँ हमारे २७ नक्षत्रो का पांच अंडज पक्षीओ में वर्गीकरण किया गया है, इनमे गिद्ध, उल्लु, कौवाँ, मुर्गा एवं मोर, इन पक्षीओ की प्रवृत्ती तथा पांच तत्वों जैसे अग्नि, पृथ्वी, जल, वायु तथा आकाश के अनुसार ज्योतिष शास्त्र में फलकथन किये जाते है । ऐसा माना जाता है कि यह पांच पक्षीओं पांच तत्वों के द्वारा किसी खास तरीके से मनुष्यो पर प्रभाव करते है या ऐसे समझा जाये कि मनुष्यों की प्रकृती इन पांच पक्षीओं के जैसी होती है । यह पांच पक्षी नित्य क्रियाओ की प्रवृत्ति में से सतत कोई एक क्रिया में रत रहते है। शासन में रहना, भोजन, चलना, निंद्रा एवं मृत्यु को पाना, यहाँ पर हम हर एक व्यक्ति ने नक्षत्र के अनुसार फल की तालिका देखेंगे ।

क्र.	नक्षत्र	पक्षी	फलादेश
1	अश्विनी, भरणी, कृतिका,रोहिणी, मृगशिर्ष	**गिद्ध**	तीव्र यादशक्ति, मझाकियाँ, संगीत प्रेमी
2	आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, आश्लेषा	**उल्लु**	आत्मविश्वास, मेहनती, बडे उद्देश्यवाले, क्रोधी, अपनो से दूर, प्रवासी
3	मघा, पूफा, उफा, हस्त, चित्रा, स्वाती, विशाखा	**कौवाँ**	स्फुर्तिले, अधिक दुश्मनी वाले, भौतिकतावादि
4	अनुराधा, ज्येष्ठा, मूल, पूषा, उषा	**मुर्गा**	क्रोधी, द्रीढ, निर्लेप, बुद्धिमत्ता, अच्छे विश्लेषक
5	श्रवण, धनिष्ठा, शततारका, पूभा, उभा, रेवती	**मोर**	प्रकृति प्रिय, भौतिकता से दूर, आत्मविश्वास की कमी, अतित ना भुलने वाले

एक और पद्धति शुक्ल पक्ष तथा कृष्ण पक्ष के जन्म वार - नक्षत्र द्वारा फलकथन

पक्ष	वारनाम	पक्षी
शुक्ल पक्ष	रविवार - शुक्रवार	उल्लु
शुक्ल पक्ष	सोमवार	कौवाँ
शुक्ल पक्ष	मंगलवार	मुर्गा
शुक्ल पक्ष	बुधवार	मोर
शुक्ल पक्ष	गुरुवार - शनिवार	गिद्ध
कृष्ण पक्ष	रविवार	कौवाँ
कृष्ण पक्ष	सोमवार	उल्लु
कृष्ण पक्ष	मंगलवार	गिद्ध
कृष्ण पक्ष	बुधवार - शुक्रवार	मोर
कृष्ण पक्ष	गुरुवार - शनिवार	मुर्गा

एक और पद्धति दिन के पांचवे भाग का मालिक पक्षी जानना तथा यह पक्षी इस समय क्या कर रहा है। यह जानने की तालिका द्वारा फलकथन जानिये ।

शुक्ल पक्ष की तालिका

जन्म के पक्षी के मृत्यु के वार	गुरुवार - शनिवार
जन्म के दिन पक्षी के शासन के वार	रविवार - मंगलवार
जन्म के रात्री पक्षी के शासन के वार	शुक्रवार
रंग	पीला
दिशा	पूर्व
नाम का स्वर	अ - आ
मित्र पक्षी	मोर - उल्लु
शत्रु पक्षी	कौवाँ - मुर्गा

कृष्ण पक्ष की तालिका

जन्म के पक्षी के मृत्यु के वार	मंगलवार
जन्म के दिन पक्षी के शासन के वार	शुक्रवार
जन्म के रात्री पक्षी के शासन के वार	रविवार - मंगलवार
रंग	काला
दिशा	पूर्व
नाम का स्वर	इ - ई
मित्र पक्षी	मोर - कौवाँ
शत्रु पक्षी	उल्लु - मुर्गा

शुक्ल पक्ष दिन मान के समय की तालिका

दिन	सूर्योदय से 2.24	+2.24	+2.24	+2.24	+2.24
रविवार	भोजन	चलना	शासन	निद्रा	मृत्यु
सोमवार	मृत्यु	भोजन	चलना	शासन	निद्रा
मंगलवार	भोजन	चलना	शासन	निद्रा	मृत्यु
बुधवार	मृत्यु	भोजन	चलना	शासन	निद्रा
गुरुवार	निद्रा	मृत्यु	भोजन	चलना	नियम
शुक्रवार	शासन	निद्रा	मृत्यु	भोजन	चलना
शनिवार	चलना	शासन	निद्रा	मृत्यु	भोजन

शुक्ल पक्ष रात्रिमान समय की तालिका

दिन	सूर्यास्त से 2.24	+2.24	+2.24	+2.24	+2.24
रविवार	मृत्यु	चलना	निद्रा	भोजन	शासन
सोमवार	चलना	निद्रा	भोजन	शासन	मृत्यु
मंगलवार	मृत्यु	चलना	निद्रा	भोजन	शासन
बुधवार	चलना	निद्रा	भोजन	शासन	मृत्यु
गुरुवार	निद्रा	भोजन	शासन	मृत्यु	चलना
शुक्रवार	भोजन	शासन	मृत्यु	चलना	निद्रा
शनिवार	शासन	मृत्यु	चलना	निद्रा	भोजन

कृष्ण पक्ष दिनमान के समय की तालिका

दिन	सूर्योदय से 2.24	+2.24	+2.24	+2.24	+2.24
रविवार	चलना	भोजन	मृत्यु	निद्रा	शासन
सोमवार	निद्रा	शासन	चलना	भोजन	मृत्यु
मंगलवार	चलना	भोजन	मृत्यु	निद्रा	शासन
बुधवार	मृत्यु	निद्रा	शासन	चलना	भोजन
गुरुवार	शासन	चलना	भोजन	मृत्यु	निद्रा
शुक्रवार	भोजन	मृत्यु	निद्रा	शासन	चलना
शनिवार	निद्रा	शासन	चलना	भोजन	मृत्यु

कृष्ण पक्ष रात्रिमान समय की तालिका

दिन	सूर्यास्त से 2.24	+2.24	+2.24	+2.24	+2.24
रविवार	भोजन	निद्रा	चलना	मृत्यु	शासन
सोमवार	मृत्यु	शासन	भोजन	निद्रा	चलना
मंगलवार	भोजन	निद्रा	चलना	मृत्यु	शासन
बुधवार	शासन	चलना	मृत्यु	शासन	भोजन
गुरुवार	चलना	मृत्यु	शासन	भोजन	निद्रा
शुक्रवार	शासन	भोजन	निद्रा	चलना	मृत्यु
शनिवार	मृत्यु	शासन	भोजन	निद्रा	चलना

उपरोक्त तालिका में समय दिनमान में सूर्योदय तथा रात्रिमान में सूर्यास्त से गिनती करनी है।

संकलन

आचार्य अशोकजी

दिन की गुणवत्ता और निर्णय लेने के निर्धारण में अष्टकवर्ग में कक्ष्या की भूमिका

कक्ष्या अवधारणा का उपयोग ग्रहों के पारगमन के परिणामों को बहुत कम समय अवधि में इंगित करने के लिए किया जाता है। इस प्रणाली में प्रत्येक राशि को 8 भागों में विभाजित किया जाता है, जिन्हें "कक्ष्या" कहा जाता है।

जब कोई ग्रह किसी राशि से पारगमन करता है, तो वह राशि के 8 बराबर भागों (3° 45') को कवर करता है। राशि के प्रत्येक बराबर भाग को कक्ष्या के रुप में जाना जाता है।

- प्रत्येक कक्ष्या का देशांतर 3° 45' होता है।
- प्रत्येक कक्ष्या को शनि (सबसे धीमी गति से चलने वाला ग्रह) से शुरु होने वाली राशि चक्र में उनकी गति के अनुसार ग्रहों के क्रम में एक स्वामी (७ ग्रह और लग्न) सौंपा गया है।
- कक्ष्या स्वामियों का क्रम शनि, बृहस्पति, मंगल, सूर्य, शुक्र, बुध, चंद्रमा और लग्न है।

कक्ष्या	ग्रह	डिग्री - से	डिग्री - तक
1	शनि	O°	3° 45'
2	बृहस्पति	3° 45'	7° 30'
3	मंगल	7° 30'	11° 15'
4	सूर्य	11° 15'	15° 00'
5	शुक्र	15° 00'	18° 45'
6	बुध	18° 45'	22° 30'
7	चंद्रमा	22° 30'	26° 15'
8	लग्न	26° 15'	30° 00'

- गोचर करने वाले ग्रह प्रत्येक कक्ष्या में नीचे दिए गए औसत समय के लिए गोचर करेंगे :

कक्ष्या	ग्रह	डिग्री - तक
1	शनि	112 Days
2	बृहस्पति	45 Days
3	मंगल	5 Days
4	सूर्य	3.75 Days
5	शुक्र	3 Days
6	बुध	2.5 Days
7	चंद्रमा	6.75 Hours
8	लग्न	15 Minutes

- गोचर ग्रह एक कक्ष से दूसरे कक्ष में जाते हैं, जहाँ कक्ष स्वामी ने उस राशि में उस ग्रह को या तो एक बिन्दू दिया है या शून्य बिन्दू दिया है।
- इस प्रकार, हम सात ग्रहों की कुल दैनिक गणना करते हैं और प्रतिदिन कुल कक्ष गणना पर पहुँचते है।

किसी भी जातक के लिए दैनिक कक्ष गणना के परिणामों पर पहुँचने के लिए उपयोग किये जाने वाले सामान्य दिशानिर्देश इस प्रकार है:

कुल दैनिक कक्ष्या बिन्दू गणना	दिन का स्वभाव
7	यह बहुत अच्छे दिन हो सकते हैं जो सफलता और लाभ के उच्च स्तर की ओर ले जाएंगे।
6	यह बहुत अच्छे दिन हो सकते हैं, जिससे कई सुखद विकास और लाभ होंगे।
5	बहुत अच्छे दिन हो सकते है जो सुखद विकास की ओर ले जाएंगे।
4	यह दिन औसत से बेहतर हो सकता है और इससे सुखद घटनाक्रम सामने आ सकते है।
3	यह एक सामान्य दिन हो सकता है जिसमें कोई बड़ी सकारात्मक या नकारात्मक घटना नहीं होगी।
2	बुरे दिन हो सकते हैं जिसमें जातक को स्वास्थ्य संबंधी परेशानियों सहित कई परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है।
1	बहुत बुरे दिन हो सकते हैं, जिसके दौरान जातक को स्वास्थ्य संबंधी बड़ी समस्याओं, दुर्घटनाओं और चोटों तथा सभी उपक्रमों में बड़ी असफलताओं का सामना करना पड़ सकता है।
0	यह सबसे खराब दिन हो सकता है जिसमें जातक को स्वास्थ्य संबंधी बड़ी परेशानियों, अस्पताल में भर्ती होने, दुर्घटनाओं और चोटों और सभी उपक्रमों में बड़ी असफलताओं का खतरा होगा।

कुल दैनिक कक्षीय गणना के आधार पर निर्णय :-

- दैनिक कक्षीय गणना १ बिन्दू-ऐसे दिनों में कम रहें और अनावश्यक जोखिम लेने से बचें और यदि संभव हो तो उन दिनों में अधिक प्रार्थना करें।
- दैनिक कक्षीय गणना ४ बिन्दू या उससे अधिक - सभी उपक्रमों में सफलता की उच्च डिग्री के लिए दोगुना अच्छा और अनुकूल होने की संभावना है। जब दैनिक कक्षीय गणना ४ या ५ बिन्दूओं से अधिक हो तो महत्वपूर्ण व्यावसायिक सौदों की योजना बनाई जा सकती है।

सर्जरी के सफल परिणाम के लिए सर्वोत्तम तिथियों का चयन :

- उस तिथि के लिए उपयुक्त मुहूर्त के साथ, यदि दैनिक कक्षीय गणना ४ से अधिक है तो सर्जरी का परिणाम सफल होने की संभावना होगी।
- दूसरी ओर, यदि कक्षीय गणना १ या उससे कम है, तो उन दिनों सर्जरी से बचने की सलाह दी जाती है।

नया घर खरीदना या बड़ा निवेश करना:

- वह तिथि जिस दिन दैनिक कक्षीय गणना ४ बिन्दुओं से अधिक थी और ऐसे दिन टालना चाहिए, जिस दिन कक्षीय गणना १ बिन्दुओं से कम थी।

चुनाव परिणामों की भविष्यवाणी में कक्षीय गणना :

- विजेता की दैनिक कक्षीय गणना हारने वाले की तुलना में अधिक होने की संभावना है।

शेयर बाजार के रुझान का मूल्यांकन करने के लिए दैनिक कक्षीय गणना का उपयोग किया जाना चाहिए:

- ४ बिन्दुओं से अधिक की दैनिक कक्षीय गणना से शेयर की कीमत में वृद्धि होने की संभावना है।
- २ बिन्दुओं से कम की दैनिक कक्षीय गणना से शेयर की कीमत में गिरावट आने की संभावना है।

नोट: उपरोक्त सभी परिणाम कुछ डेटा विश्लेषण पर आधारित हैं, इनकी भविष्यवाणी करने से पहले प्रत्येक चार्ट के लिए गहन अध्ययन और विश्लेषण की आवश्यकता होती है।

- विकास मिश्रा

Difference between Vedic and KP Astrology

Vedic

1) It's the traditional system of astrology - Makes use of various charts (16 Divisional) and tables other than the birth (natal) or horary chart.

2) The basis of traditional astrology is Rashi chart.

3) No Standard Procedure.

4) Degrees of rising ascendant is taken as Bhav - Madhya.

5) Requires one to memorise too many dictums and rules.

6) It takes lot of master it.

7) Broadly speaking, traditional astrology gives general results by way of Macro Alalysis and gives near results.

8) Vedic mostly uses Laxmi Ayanamsa.

9) Aspect of Rahu - Ketu taken.

१०) स्पे ट्रीट नही दी गई है राहु को.

११) गुरु - शुक्र, शुभ ग्रह गिना जाता है। बुध का शुभत्व या अशुभत्व का आधार कौन से ग्रह के साथ है उस पर है। चन्द्र का आधार तिथी पर है। सूर्य, , शनि - मंगल, राहु, केतु को पाप ग्रह गिना जाता है। पंचधा मैत्री और भाव के स्वामी के हिसाब से शुभाशुभ बन सकते है।

KP

1) The KP technique on the other hand, uses only a few tools that remain constant in every situation.

2) The basis of the KP technique lies in two fundamental tools. The Placidus House Division (Niryan cuspal chart) and the sub division of consteliations.

3) It's structural & methodological.

4) Degrees of rising ascendant is taken as Bhav - Arambh.

5) It is concept based.

6) Easy to learn, fast and accurate.

7) In KP Astrology more accurate can be predicted by way of Micro Analysis. It can differentiate life patterns of twins.

8) KP system uses KP Ayanamsa. The difference between the two is about 6 (चित्रापक्ष अयनांश ६)

9) Aspect of Rahu - Ketu not taken.

१०) स्पे. ट्रीटमेन्ट दी गई है।

११) कोई भी ग्रह संपूर्ण शुभ नही और संपूर्ण अशुभ भी नही। कौनसी बाबत का विचार करना है उसके उपर शुभ-अशुभ का निर्धार होता है।

Difference between Vedic and KP Astrology
by : Dr. Harilal Maade

Vedic

१२) ९७ % ज्योतिष उपयोग करते है।

१३) दशा और योग का उपयोग होता है।

१४) Divisional Chart होता है ।

१५) No Placidus House Division

१६) No use of sub-lord theory

१७) No use of Rulling Planet

१८) वैदिक Austrology श्रीपती भाव चलित Follows

१९) नक्षत्रों को विभाजित नहीं किया जाता।

२०) भाव मध्य को भाव की शुरुआत गिनी जाती है।

२१) स्थिर राशी चक्र का उपयोग किया है।

२२) षडबल का उपयोग होता है।

२३) फल देखने के लिये अलग-अलग योग का विचार किया जाता है।

२४)१० वे घर से पिता देखा जाता है।

२५) भाव में पडा हुआ ग्रह, भाव को ग्रहों की द्रष्टी, बाजुके भाव में बैठा ग्रह, भाव के स्वामी की स्थिति का फल कथन होता है।

२६) भाव की स्थिति, राशी की स्थिति, नक्षत्र की स्थिति, षोडशबल, अष्टकवर्ग आदि से फल जाना जाता है।

KP

१२) ३% ज्योतिष उपयोग करते है।

१३) दशा और योग मेन्शन नही किया।

14) No Divisional Chart

15) Placidus House Division होता है।

16) Sub-lord theory use होती है।

17) Use of RP for selecting time

18) निरयन भावचलित अनुसरण करती है।

१९) २७ नक्षत्रों को २४९ में विभाजित किया है।

२०) भाव आरंभ से भाव गिना जाता है।

२१) स्थिर राशी चक्र गिना जाता है।

२२) षडबल का उपयोग नही होता है।

२३) पुर्नभू योग के सिवा अन्य कोई योग का विचार नही किया जाता।

२४)९ वे घर से पिता देखा जाता है।

२५) भाव का उपपति भावका बल निश्चित करता है, अच्छा या बुरा।

२६) नक्षत्र स्वामी और उपपति पर फल का आधार रहता है।

Difference between Vedic and KP Astrology
by : Dr. Harilal Maade

Vedic	KP
२७) भाव में बैठा ग्रह, भाव का स्वामी कारक और उस पर द्रष्टी करनेवाले ग्रहों को भाव का निर्देशक गिना जाता है।	२७) भाव के स्थित ग्रह के नक्षत्र में स्थित ग्रह, भाव में स्थित ग्रह, भाव स्वामी के नक्षत्र में स्थित ग्रह भाव का स्वामी जिया जाताहै।
२८) चोक्कस मुहुर्त के लिए पंचाग में पंचागकी भाषा का उपयोग उपरांत लग्नकुंडली, होरा. चोघडिया और दिनशुध्धि देखा जाता है।	२८) लग्न कुंडली में निर्देशको पर से मुहुर्त निकाला जाता है।
२९) भिन्न - भिन्न दशाओं, गोचर, अष्टक वर्ग, सर्वतो भद्र चक्र देखा जाता है।	२९) सिर्फ विशोत्तरी दशा और गोचर देखा जाता है।
३०) शासक ग्रह का उल्लेख नहीं है।	३०) लग्नके नक्षत्रका स्नामी, लग्नेश चंद्र का नक्षत्र स्वामी, चंद्र का राशी स्वामी व दिनपती लिया जाता है।

संकलन

डॉ. हरीलाल मालदे

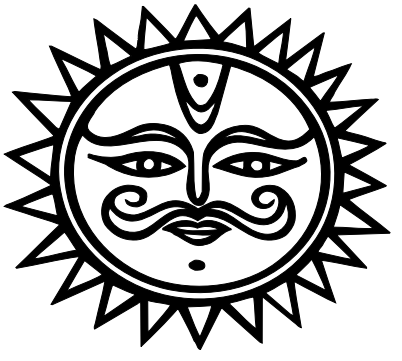

अष्टक वर्ग एक अनुठा अध्ययन

ज्योतिष शास्त्र में फल कथन की दो प्रणाली है एक सामान्य पद्धति जिससे भाव में स्थित ग्रहों की स्थिति का अभ्यास करना और दूसरी विशिष्ट पद्धतियों में अष्टम वर्ग एक है। विद्धान ज्योतिषीयों की यह पहली पसंद है क्योंकि अष्टक वर्ग अपने आप में पूर्ण ज्योतिष है। यहाँ भाव का बल और उसकी गणना करते हैं। सामान्य तौर पर ज्योतिषीय गणनाओं में अष्टक वर्ग का उपयोग करने से एक सटिक और अनुभवी फल कथन नीकल कर आता है।

अष्टक वर्ग में हर स्थान के लिए बिंदुओं की संख्या नक्की की गई हुई है, यदि स्थान तय किए हुए बिंदुओं से ज्यादा बिंदु युक्त हो तो वह स्थान शुभ फल प्राप्त करता है।

सांख्य दर्शन अनुसार :

1. पंच महाभूत : पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश
2. पंच तन्मात्र : गंध, स्वाद, स्वरुप, स्पर्श, नाद (आवाज)
3. पांच ज्ञानेंद्रियों : आंख, कान, नाक, जीभ और त्वचा
4. पांच कर्मेंद्रियां : स्वर, हाथ, पैर, उत्सर्ग और वंशवृद्धि के अवयव, मन, बुद्धि, अहंकार और प्रकृति यह 24 मूल तत्व है। काल पुरुष संबंध में विकास की शुरुआत होती है जो 25वा तत्व है।

जन्म और मोक्ष, निर्वाण और समर्पण जैसे उच्च ध्येय और विकास प्राप्त करने का साधन है। इसीलिए लग्न को 25 बिंदु तत्व के अनुसार दिए गए हैं उतने ही बिंदु पांचवे स्थान को जो पूर्व पुण्य और संचित कर्मो को दर्शाता है।

ध्यैय की पूर्ति के लिए जातक तपस्या और भाग्य पर आधारित होने से, नवम स्थान से देखा जाता है और हिम्मत पराक्रम तृतीय स्थान से दोनों स्थानों को 29 बिंदु दिए गए है।

दसवां स्थान जो कर्म स्थान है जिसको 36 बिंदु देके शक्तिशाली भाव बनाया है।

छठा स्थान जो भाग्य भाव से दसवां स्थान है जो साहस और सफलता दर्शाता है इसलिए छठे स्थान को 34 बिंदु देके शक्तिशाली बनाया है।

11 स्थान जो सर्व प्रकार के लाभ को दर्शाता है उसे 54 बिंदु देके सबसे ज्यादा मजबूत बनाया है।

कुटुंब और धन - दूसरा स्थान - 22, मिलकत रिश्तेदार सुख चौथा स्थान - 24, स्नेह भागीदारी आवेग सप्तम - 19 और अष्टम स्थान - 24, से जातक को भौतिकता की तरफ ले जाते होने से यह सभी स्थानों को कम बिंदु दिए गए है।

बारवां भाव व्यय दर्शाता है इसलिए यह स्थान को सबसे कम बिंदु - 16 दिए गए हैं।

सर्वाष्टक वर्ग विभिन्न अष्टक वर्ग में प्राप्त हुए शुभ बिंदुओं का योग है। यह राशि और भाव की शक्ति और भाव के संबंधित शुभता दर्शाता है।

महान ज्योतिष आचार्य के अनुसार सामुदायाष्टक वर्ग में कोई भी भाव में 28 बिंदु युक्त हो तो शुभ फलदाई बनता है 28 से कम बिंदु युक्त स्थान फलों में कमी करता है। सब ग्रहों द्वारा प्राप्त शुभ बिंदु का योग 337 होता है जिसे 12 भाव से विभाजित करने पर 28 बिंदु प्रत्येक भाव को मिलते हैं यह गणना अनुसार 28 और उससे अधिक बिंदु वाला भाव अच्छा फल देता है। उदाहरण :

राशि	11	12	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
लग्न और ग्रह	के	-	-	श ह	-	गु प्लु	रा	सू बु शु ने मं	चं	-	-	-
सामुदाय बिंदु	31	27	26	33	29	42	23	20	21	29	32	24

जन्म लग्न, भाग्य भाव और लाभ भाव में यदि 30 से अधिक बिंदु हो तो ऐसा सुंदर स्वस्थ और भाग्यशाली होता है।

*लग्न - 31, भाग्य भाव - 21, लाभ भाव - 32

लग्न और लाभ भाव के बिंदु 30 से अधिक है परंतु भाग्य भाव में 21 बिंदु हैं, यहाँ जातक के जीवन में अधिक उतार चढाव दर्शाता है । अधिक परिश्रम के बाद लाभ दर्शाता है।

सामुदायाष्टक वर्ग लग्न, द्वितीय, चतुर्थ, नवम, दशम और एकादश स्थान के बिंदु को जोड़कर योगफल 164 या ज्यादा हो तो जातक समृद्धि को प्राप्त करता है। यहाँ आमदनी खर्चे से ज्यादा है। अगरश् योगफल 164 से कम तो खर्च ज्यादा दर्शाता है।

भाव: लग्न द्वितीय चतुर्थ नवम दशम एकादश

31+27+33+21+29+32 = 173

*जातक की आमदनी उसके खर्चे से ज्यादा दर्शाती है।

लग्न, चतुर्थ, पंचम, सप्तम, नवम और दशम स्थान के बिंदुओं को जोड़ो, यह स्थान व्यक्ति के अंतर मन को दर्शाता है। बाकी के जो स्थान है वह बाह्यमन दर्शाता है । अंतर मन के अंक ज्यादा है तो जातक संतोष और शिक्षा से ज्ञान प्राप्त करेगा वो सत्कार्य दान-धर्म करेगा और उसके विपरीत स्थिति में जातक चिंता में डूबा कपटी हो सकता है।

भाव: लग्न चतुर्थ पंचम सप्तम नवम दशम

31+33+29+23+21+29 = 166

जातक के बाह्यमन के अंक यहाँ ज्यादा है, जातक दान धर्म का कार्य करेगा। चिंता में डूबा रहेगा और धन उपार्जन के लिए कपट भी कर सकता है।

दशम भाव से अधिक बिंदु लाभ स्थान में और द्वादश भाव के बिंदु दकादश से कम हो और लगन के बिंदु व्यय भाव से अधिक हो तो ऐसा जातक सफल और वैभव संपन्न इंसान होगा।

लाभ भाव के - 32 बिंदु, दशम भाव के - 29 बिंदु से अधिक है और द्वादश भाव की 24 बिंदु लग्न - 31 जातक वैभव संपन्न होगा ।

*नौकरी और व्यवसाय जाने अष्टक वर्ग से :-

सर्वाष्टक वर्ग के भावो को चार खंडो में विभाजित किया गया है।

1. बंधु भाव - लग्न, पंचम, नवम भाव -

यह भावो का योगफल अधिक बिंदु होने पर जातक सेवा भावी, व्यापारी या व्यवसायी होता है। नौकरी करना या किसी के अधीन काम करना उसे पसंद नही आता ।

* भाव : लग्न - 31, पंचम - 29, नवम - 21 = 81

2. सेवक भाव - द्वितीय, छठा, दशम भाव - होता है। भाव का योगफल अधिक बिंदु होने पर जातक नौकरी करता है उसे अपने व्यापार में कोई रुचि नही होती । ऐसा जातक सरकारी या गैर सरकारी संस्थानों में उच्च पद भी प्राप्त कर लेता है पर उसे किसी की नीचे कार्य करना पड़ता है।

* भाव : द्वितीय - 27, छठा - 42, दशम - 29 = 98

3. पोषक भाव - तीसरा, सप्तम, एकादश भाव -

भाव में अधिक बिंदु होने पर ये जातक को धन, मान, प्रतिष्ठा देते हैं, वह अनेक व्यक्तियों का पालन पोषण करने वाला या उन्हे रोजगार देने वाला होता हैं। ऐसा जातक उद्योगपति या व्यापारी हो सकता है।

* भाव : तीसरा - 26, सप्तम - 23, एकादश - 32 = 81

4. घातक भाव - चौथा, आठवॉ, द्वादश भाव -

घातक भावों मे सर्वाधिक बिंदु हो तो ऐसा व्यक्ति घोटालेबाज, तस्कर, अनैतिक काम करने वाला, अनैतिक तरीको से धन कमाने वाला होता है। कई बार ऐसा जातक बाबा, सन्याशी या संत भी बन जाते है।

यहाँ जातक ने सेवक भाव में ज्यादा अंक प्राप्त किए हैं, जातक किसी के नीचे कार्य करेगा और उच्च पद को प्राप्त करेगा।

*पोषक का योगफल घातक से ज्यादा हो तो जातक धनवान और उसके विपरीत घातक का योगफल पोशक से ज्यादा हो तो जातक धन की कमी दर्शाता है।

"आ नो भद्रा : क्रतवो यन्तु विश्वतः" (ऋग्वेद ।-89-i) हमें सर्वत्र सभी दिशाओं से कल्याणकारी विचार प्राप्त हो।

- प्रीति ठाकर

।। ॐ श्री गणेशाय नमः ।।

आज आपके गुरुजी श्री अशोक आचार्य जी की कृपा से संतान तथा संतान होने या ना होने की कुछ विधी हम ज्ञात करेंगे जो हमारे गुरुओं द्वारा हमें ज्ञात है। हम संतान के लिए कुंडली में पाँचवाँ भाव तथा पाँचवे भाव के मालिक, कारक ग्रह, गुरु महाराज तथा पांचवे घर पर किस ग्रह की दृष्टि है, ये देखते है। इसके अलावा पाँचवें भाव से पाँचवाँ भाव तथा गुरु से पाँचवाँ कौन सा ग्रह विराजमान है। इन सब के अलावा आज जब जातक का समय के अनुसार विवाह न होना विवाह होने के उपरांत संतान से ज्यादा अपने भविष्य पर ध्यान देना आज खान - पान तथा रहन - सहन भी संतान उत्पत्ति में देरी या संतान न होने का कारण बनता है। ज्योतिष द्वारा कुछ उपाय तथा सही मार्ग दर्शन द्वारा इस समस्या का समाधान हो सकता है।

<u>नियम :</u>

१. पुरुष कुंडली में हमें बीज स्पष्ट देखना चाहिए ।

२. स्त्री कुंडली में हमें क्षेत्र स्पष्ट देखना चाहिए ।

बीज स्पष्ट तथा क्षेत्र स्पष्ट हम यह पता करने को निकलते हैं कि पुरुष या स्त्री किस में कमी है और किसको चिकित्सीय परामर्श की आवश्यकता है।

बीज स्पष्ट तथा क्षेत्र स्पष्ट कैसे निकलते हैं, इसकी विधि नीचे दी गयी है।

पुरुष के लिए बीज स्पष्ट	स्त्री के लिए बीज स्पष्ट
गुरु	गुरु
शुक्र	चन्द्र
सूर्य	मंगल

पुरुष कुंडली में बीज स्पष्ट निकालने के लिए (गुरु + शुक्र + सूर्य) की राशि, अंश तथा कला को आपस में जोड़ देते हैं, इसी प्रकार स्त्री की कुंडली में (गुरु + चन्द्र + मंगल) की राशि, अंश तथा कला को आपस में जोड़ देते हैं।

फिर हमें यह देखना है कि वह किस नवमांश तथा सप्तमांश में गया है।

इसके बाद यदि बीज स्पष्ट विषम राशि (१, ३, ५, ७, ९, ११) में जाए तथा नवमांश में भी इन्ही राशि में आए तो संतान उत्पत्ति की संभावना ज्यादा होती है।

यही क्रिया हम स्त्री की कुंडली में देखेंगे, यदि यहाँ सम राशि (२, ४, ६, ८, १०, १२) है।

१. यदि पुरुष राशि में राशि कुंडली तथा नवमांश कुंडली में सम आए तब संभावना कम होगी ।

२. यदि पुरुष राशि में राशि कुंडली में सम तथा नवमांश कुंडली में विषम आए तब संभावना ५०-५० होगी ।

यही नियम स्त्री कुंडली में भी लगेगा ।

इस क्रिया के द्वारा हमें यह ज्ञात हो गया कि संभावनाएँ कहाँ ज्यादा है।

गुरु = ०२.१०.२४

शुक्र = ०३.२९.४५

सूर्य = ०५.००.३४

११.१०.४३ ======> बीज स्पष्ट आया

यहाँ देखिये ११ राशि १० अंश तथा ४३ कला आए, इसका मतलब ११ राशि पूरी हो चुकी है और बीज स्पष्ट मीन राशि में है। अब इसका नवमांश निकलते हैं, इसका नवमांश ७वें नवमांश में गया जो कि एक विषम राशि है।

इसका मतलब इस पुरुष को देरी से संतान प्राप्ति होगी ।

इस विधि से हम महिला की कुंडली भी देख सकते है।

अब जब लग्न कुंडली में सब कुछ सही है तब ५वें भाव, ५वें भाव के मालिक तथा कारक गुरु भी सही है तो इस विधी से हम यह ज्ञात करते हैं कि स्त्री या पुरुष, किसे चिकित्सकीय परामर्श की आवश्यकता है।

नोट : ५वें भाव, ५वें भाव के मालिक तथा कारक गुरु तथा गुरु से ५वा भाव, चन्द्र कुंडली से स्त्रियों के लिए ५वां भाव तथा सिंह राशि से सप्तमांश कुंडली, इसके अलावा मेष, मिथुन, सिंह तथा कन्या राशि (बैरन राशि) यानी बीज राशि माना गया है।

यदि यह राशि पंचम भाव में बीज स्पष्ट तथा क्षेत्र स्पष्ट आए तो भी विघ्न देती है।

बीज स्पष्ट तथा क्षेत्र स्पष्ट ६, ८, १२ भाव में नहीं होना चाहिए ।

बीज स्पष्ट तथा क्षेत्र स्पष्ट पाप कर्तरी में नहीं होना चाहिए ।

बीज स्पष्ट तथा क्षेत्र स्पष्ट पर २ या २ से अधिक पाप ग्रहों की दृष्टि भी नहीं होना चाहिए ।

संकलन : आनंद उपाध्याय

નિરયન અને કે. પી. - એક તુલના

૧) અયનાંશ અંગે :

નિ : ચિત્રાપક્ષ, રામજ, લાહિરી વગેરે જુદા જુદા અયનાં શોનો ઉપયોગ કરવામા આવે છે.

કે. પી. : ખાસ નક્કી કરેલા અયનાંશ વપરાય છે. કે પી ના અયનાંશ છુ ઓછા છે.

૨) જન્મ સમયની અકાસણી :

નિ : જન્મ સમય સુધારવા માટે જુદી જુદી પધ્દતીઓ જેમ કે જન્મ સમયના લગ્નનુ નક્ષત્ર, ઘટી પળ પધ્ધતિ નવમાંશ વ્દાદશાંશ પધ્ધતિ વગેરે.

કે. પી. : શાસક ગ્રહો વ્દારા જન્મ સમયની ચકાસણી કરાય છે.

૩) ભાવ પધ્ધતિ

નિ. : એક સરખા ભાવ, શ્રીપતિ પધ્ધતિ અને પરાશરી વગેરે

કે. પી. : ફક્ત પ્લેસિડસ આર્ક પધ્ધતિ જ વપરાય છે.

૪) ભાવ :

નિ. : ભાવ મધ્યને - નાવની શરૂઆત ગણવામાં આવે છે.

કે. પી : ભાવની શરૂઆતથી જ ભાવ ગણાય છે.

૫) વિભાગીય કુંડળીઓ

નિ : જુદા જુદા પ્રકારની વિભાગીય ડી૧, ડી૨, ડી૪, ડી૯, ડી૨૪, ડી૬૦..

કે. પી. : વિભાગીય કુંડળી ઓને સ્થાન નથી.

૬) બળ :

નિ : ષડજળનો ઉપયોગ થાય છે.

કે. પી. : ષડબળનો ઉપયોગ થતો નથી.

૭) યોગ :

નિ. : ફળ જોવા માટે જુદા જુદા શુભ - અશુભ યોગોના વિચાર કરવામાં આવે છે.

કે. પી. : પુનર્ફુ યોગ સિવાય અન્ય કોઈ પણ યોગનો વિચાર કરવામાં આવતો નથી.

૮) ભાવનુ ફળ કથન :

નિ.: ભાવમા પડેલા ગ્રહો ભાવતે ગ્રહોની દ્રષ્ટી ભાવના સ્વામીની સ્થિતિ વગેરે પરથી ફળ કથન થાય છે.

કે. પી. : ભાવનો ઉપપતિ ભાવનુ બળાબળ નક્કી કરે છે.

૯) ગ્રહો પરથી ફળકથન :

નિ.: ભાવની સ્થિતિ, રાશિની સ્થિતિ, નક્ષત્રની સ્થિતિ, ષોડશબળ, અષ્ટકવર્ગ વગેરેથી ગ્રહનુ બળ જાણી શકાય છે.

કે. પી. : નક્ષત્ર સ્વામી અને ઉપપતિ પર ફળનો આધાર છે.

૧૦) રાહુ - કેતુ :

નિ. : રાશિનો અધિપતિ ઉચ્ચ નીચ અને દ્રષ્ટી અંગે જ્યોતિષકારોંએ જુદી જુદી રાશી બતાવી છે.

કે. પી. : તેને કોઇ સ્થાઇ રાશિનુ અધિપત્ય આપવા નથી તેને

૧) યુતિમા રહેલા ગ્રહ

૨) ગ્રહોની નિરયન દ્રષ્ટી

થતા ગ્રહો પર ફળ કથન નો વિચાર થાય છે.

૧૧) શાસક ગ્રહો :

નિ. : તેને ગણત્રી કરવામા આવ્યુ નથી

કે. પી. : લગ્નના નક્ષત્ર નો સ્વામી, લગ્નની રાશિનો સ્વામી, ચંદ્રના નક્ષત્રનો સ્વામી, ચંદ્રની રાશિનો સ્વામી અને દિવસનો સ્વામી આ સ્વામીત્વ કરનારા ગ્રહો છે. એમાથી જે બળવાન ગ્રહ બને છે તે શાસક ગ્રહ કહેવામા આવે છે.

શાસક ગ્રહ ની સ્થીતિ થી હું નુ આકલન ફળકથન રૂપે કરવામા આવે છે.

હિમાંશુ આર. ઓઝા.

इन्दु लग्न छुपा इंगित

कहा जाता है की तन दुरुस्त -तो मन दुरुस्त, और किसी भी कार्य को तन मन और धन से किया जाए तो पुरा विश्व उसे सफल करने से रोक नहीं सकती। किन्तु वर्तमान समय में, खासकर युवावर्ग सिर्फ धन के पीछे मानो दौड ही रहा है। गलत भी तो कुछ नही है ना ? धन की आवश्यकता किसे नही है, लक्ष्मी का स्वागत करने को तो हम सभी हमेशा उत्सुक ही होते है।

ज्योतिषी के पास आने वाले करीब करीब सभी का यह प्रश्न होता है कि मैं करोडपति कब बनुंगा ? मेरी धन-संपत्ति कैसी है ? क्या मै धनवान बन पाऊँगा ?

लग्न कुंडली का दुसरा (धन भाव), ग्यारहवा (लाभ भाव) पाँचवा (पूर्व पूण्य) और नौवा भाग्य हमे हमारी धन संपत्ति से अवगत करते है। परंतु अनगिनत धनसंपत्ति - करोडपति बनने के योग को भी हम कुंडली से जान सकते है। जिस प्रकार होरा कुंडली जातक की धन स्थिति दर्शाती है, उसी प्रकार ज्योतिष शास्त्र मे **इन्दु लग्न** की भी महत्ता है। जिसके अभ्यास से हम गहराई तक पहुँच सकते है। आज हम इसी विषय को विस्तृत जानेंगे और देखेंगे किसके भाग्य की तिजोरी कितनी भरी है ?

ज्योतिष विषयक अनेक प्राचिन ग्रंथो में इन्दु लग्न का उल्लेख किया गया है। इन्दु लग्न का अर्थ होता है चंद्र - अर्थात चंद्र की शीतल चांदनी जैसा संपत्ति, सुख बताने वाली कुंडली, व्यक्ति के जीवन में पैसो की आवक - जावक व उसका स्तर देख सकते है। धन सुख की माहिती सटीक और बहुत ही सरल तरीके से प्राप्त करने के लिये इन्दु लग्न महत्वपूर्ण है।

इन्दु लग्न कैसे ज्ञात किया जाए : इन्दु लग्न जानने के लिए सुर्यादि ग्रहों को प्राप्त नैसर्गिक कला का प्रयोग किया जाता है। राहु - केतु छाया ग्रह होने के कारण इन्दु लग्न मे इनको गणना में नही लिया जाता है। शेष सुर्यादि सातों ग्रह सम्मिलित होते है। इन्दु लग्न की गणना हेतु प्रत्येक ग्रह के निश्चित अंक निरधारित किये गये है। जिसे ग्रहो कि कलाएँ - रश्मियाँ के रुप में जाना जाता है, जो इस प्रकार होते है।

	ग्रह	कलाएँ		ग्रह	कलाएँ
१	सूर्य	३०	५	गुरु	१०
२	चंद्र	१६	६	शुक्र	१२
३	मंगल	६	७	शनि	०१
४	बुध	८			

इन्दु लग्न शोधन पध्धति :- सर्वप्रथम लग्न से नवम राशि के स्वामी ग्रह की कलाएँ और चंद्र से नवम राशी स्वामी ग्रह की कलाएँ, दोनो को जोड दो। प्राप्त संख्या यदि १२ से अधिक हो १२ का भाग दो। (अन्यथा जरुरी नही है।) जो शेष संख्या मिले उन्हे भाव चंद्र से आगे गिनते हुए भाव मिले, वही हमारा इन्दु लग्न बनेगा। यदी शेष फल ०, शुन्य हो तो चंद्र की राशी ही इन्दु लग्न बनेगी।

Ex 1 - लग्न कुंडली

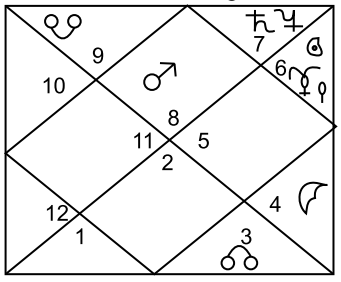

इन्दु लग्न

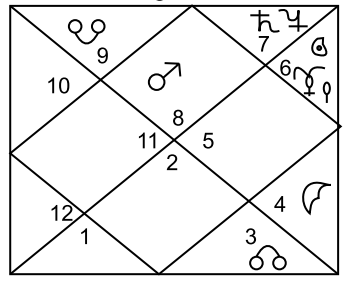

लग्न से नवमेश चंद्र - चंद्र की कलाएँ - १६

चंद्र से नवमेश गुरु - गुरु की कलाएँ - १०

१६+१०= २६, २६ ÷ १२ = २ शेष = २

यहा चंद्र कि कर्क भाव से दो भाव आगे गिनते हमे सिंह - दसवा भाव मिलता है। सिंह लग्न कि इन्दु लग्न कि कुंडली बनेगी।

Eg 2 - लग्न कुंडली

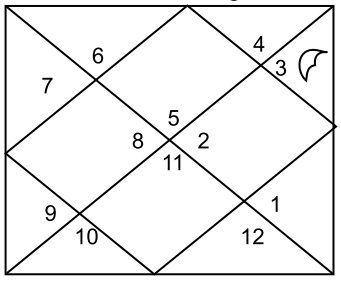

इन्दु लग्न कुंडली

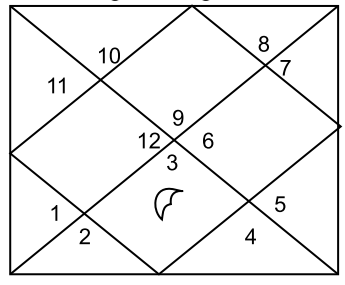

लग्न से नवम - मेश - मंगल - ६ कलाएँ

चंद्र से नवम - कुंभ - शनि - १ कला

६ + १ = ७

यहाँ चंद्र से सातवा भाव आगे गिनने पर धनु राशी आती है। तो इन्दु लग्न धनु राशि का बतएँगे।

उपरोक्त विधि से हम इन्दु लग्न कुंडली तैयार कर सकते है। इन्दु लग्न कुंडली का अभ्यास - फलादेश हेतु इन नियमों को समझना होगा।

१) इन्दु लग्न कुंडली के धनेश और लाभेश का किसी भी प्रकार का संबंध व्यक्ति को धनवान बनाता है।

२) इन्दु लग्न दुसरे और ग्यारहवे भाव पर जितने शुभ ग्रहों का प्रभाव होगा उतनी ही धन संपत्ति अधिक होगी।

३) इन्दु लग्न में नैसर्गिक शुभ ग्रह अधिक होंगे तो जातक अधिक धनी होगा।

४) इन्दु लग्न में एक ही शुभ ग्रह हो और वह पाप प्रभाव से मुक्त हो तो ज्यादा धन कमाते है।

५) यदि यहाँ अशुभ ग्रह हो, उसपर पाप प्रभाव पडता हो तो धन सुख उतना अच्छा न होगा।

६) इन्दु लग्न में उच्च का अशुभ ग्रह हो तो जीवन के प्रथम भाग में धन सुख सामान्य किंतु दुसरे भाग में अधिक होगा।

७) इन्दु लग्न में उच्च का पाप ग्रह फिर भी श्रीमंत तो बनाता है, परंतु यदि यह पाप ग्रह नीच का हो तो दरिद्र योग बनाता है।

८) इन्दु लग्न में स्थित सुर्य, शनि और मंगल जैसे अशुभ, क्रुर ग्रह भी इन्सान को पर्याप्त पैसा दे ही देता है।

९) आम तोर पर लग्न कुंडली में इन्दु लग्न का भाव या उसका लगनेश जितना बलवान होगा, व्यक्ति उतना ही धनिक होगा। इन्दु लग्न या इन्दु लग्नेश से संबंधित दशाओं मे पैसो कि फुहारें बरसेगी।

१०) इन्दु लग्न बलाबल देखने के लिए इसमे अशुभ ग्रह स्थित है या नही। अथवा इन्दु लग्नेश अशुभ भाव मे, अशुभ ग्रहों के प्रभाव मे है या नही. आदि का अभ्यास करके बल की अधिकता - न्युन्ता समझ सकते है।

११) इन्दु लग्न से केंद्र और त्रिकोण मे शुभ ग्रह की दशा धन प्राप्ति करवाएगी। इससे विपरीत ३-६-८-१२ भाव स्थित ग्रह व भावेश कि दशा धन हानी दरशाती है। इन्दु लग्न भाव में किसी भी ग्रह का न होना ज्यादा शुभ नही माना जाता है। इस परिस्थिति मे सिर्फ इन्दु लग्नेश की स्थिति ही देखी जाएगी। यहा सिर्फ एक ही शुभ ग्रह भी इंसान को करोडपती बना सकता है और यदि कोई एक पाप ग्रह हो तो भी व्यक्ति लखपति तो होता ही है और दो पाप ग्रह होने पर व्यक्ति हजारो मे खेलता है। इन्दु लग्न भाव को उसका स्वामी देखता हो तो इंसान धनवान होता है।

१२) इन्दु लग्न मे स्थित शुभ ग्रह और इन्दु लग्नेश अपनी-अपनी दशाओं में संपत्ति सुख देते है।

१३) इन्दु लग्न और लग्नेश का संबंध शुभ-अशुभ ग्रहो के प्रभाव में हो तो मिश्र फल देते है।

१४) इन्दु लग्न से २-५-९-११ भाव - भावेश का संबंध स्थाई रुप से उत्तरोत्तर अधिक धन प्राप्त करवाते है।

१५) इन्दु लग्न के शुभ भाव में उच्च का, स्वगृही या मूल त्रिकोणी गृह जीवन मे तीव्र और स्थाई, आर्थिक लाभ देते है।

१६) इन्दु लग्न कुंडली में अशुभ गृह उच्च का स्वगृही या मूल त्रिकोणी हो तो अपनी दशा के अंत धन संपत्ति दे जाता है।

१७) इन्दु लग्न कुंडली मे योग कारक गृह का द्रष्टी - युति संबंध भाव - भावेश के साथ होने पर जीवन में उन्नती प्राप्त होती है।

१८) इन्दु लग्न के शुभ भाव और शुभ ग्रहो पर से शुभ ग्रहो का गोचर भी आर्थिक उपलब्धियों मे आधारशीला होते है।

१९) यदि इन्दु लग्न जन्म कुंडली के ३-६-८-१२ भाव मे आता हो तो वह शुभ नही माना जाता है। तिसरा भाव धन प्राप्ति में अधिक संघर्ष दर्शाता है। छठे भाव से शत्रुता का व्यवहार दर्शाता है। ८ वे भाव से धन प्राप्ति की संभावनाएँ नष्ट करता है और १२ भाव धन प्राप्ति के मार्ग को पहचाननें नही देगा।

२०) इन्दु लग्न से २-५-९-११ भाव मे सर्वाष्टक वर्ग के बिंदु जितने अधिक उतनी ही आर्थिक स्थिति मजबुत होगी।

कुछ एक प्रसिध्द व्यक्तियों के इन्दु लग्न देखते है।

जय ललिता (राजकीय नेता) २४-०२-१९४८, मद्रास

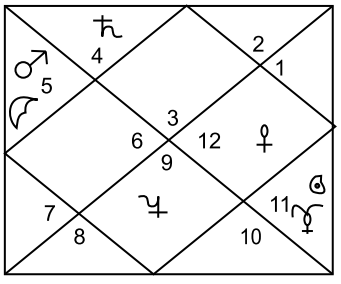

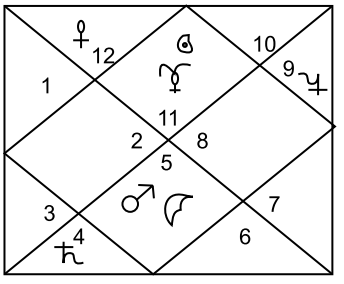

राज कपुर : १४-१२-१९२४, पेशावर पाकिस्तान

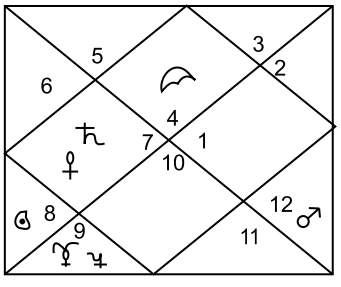

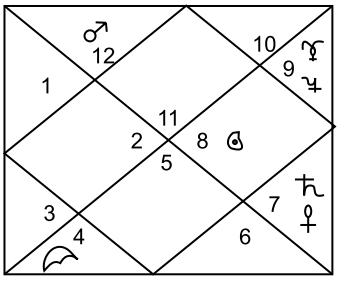

सचिन तेंदुलकर : २४-४-१९७३, मुंबई

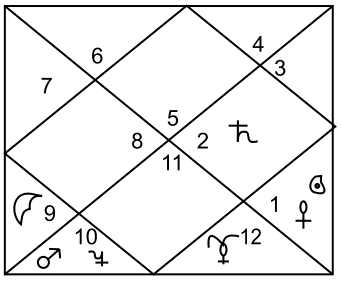

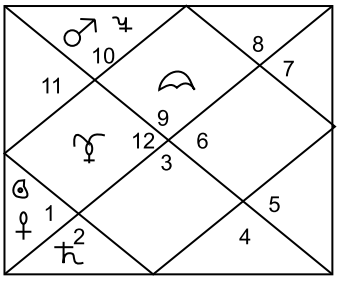

तो आइये देखते है हमारी इन्दु लग्न की कुंडली में क्या इंगित छुपा है।

हरी ॐ : **वर्षा धीरज रावल**

अस्त ग्रह - फल कथन

अस्त ग्रह, नीचस्त ग्रह, पिडीत ग्रह फलीभुत कैसे करे और फर्क तथा अंतर क्या है।
तीनो स्थितियां खराब है।

अस्त ग्रह :

ग्रह अस्त कब होता है ? सुर्य के ज्यादा समीप होने के कारण ग्रह अपनी रोशनी खो देता है, प्रभावहीन, तेजहीन हो जाता है। हमारी कुंडली में कैसे फलित होगा ? ग्रह जिस भाव का अधिपति है उस भाव के कारकत्व पर से अपना प्रभाव खो देता है। जो भाव का कारकत्व आप को उन्नति वृध्धि देना है मगर वह नही मिलती। आप प्रभावशाली, सुंदर, ज्ञानी कर्मठ व्यक्ति है मगर आपके सामने वाले निम्न कक्षा के होने पर भी प्रथम स्थान प्राप्त करेगा, आप दुसरे स्थान पर रहोगे, किसी का आपकी तरफ ध्यान ही नही होगा। सही अर्थ में आप एक लायक व्यक्ति हो।

यहा अस्त ग्रह समपर्ण करवाता है।

यह चीज मुझे नही आती है मै उसे सीखने का प्रयास करुंगा यह वक्री ग्रह करवाता है।

जब की अस्त ग्रह वाला व्यक्ति मुझे यह नही आता है तो नही आता है, मै क्या करुं, यह करवाता है अस्त ग्रह। यदि अस्त ग्रह वक्री भी हो वो यह नियम उस जातक पर नही लगेगा। अन्यथा जब भी ग्रह अस्त का होता जाता है तो हम समपर्ण कर देते है। हमे उस चीज-वस्तु की चाह छोड देते है। अस्त का ये अर्थ नही है की वह ग्रह के सारे प्रभाव खराब हो जायेंगे। ग्रह स्वराशि का हो या उच्च का होने के बाद भी अस्त ग्रह हो सकता है, बढीया स्थिति होने पर उसका प्रभाव तो रहेगा, लेकीन हम नाम की बात करें तो लोग हमे जानते क्यों नही मुझ में जो खुबियाँ है वह लोगो को पता कैसे चले, यहाँ इस प्रकार की दिक्कते आती है।

नीचस्त ग्रह :

ग्रह नीचस्त हो गया तो कमजोर हो जाता है। जब ग्रह नीचस्त के होते है, उनमे से कुछ ग्रह अपने मित्र के घरमें नीचस्त हो जाते है, मित्र के घरमें बैठना तो शुभ माना जाता है। यदि कोई ग्रह मित्र के घर में हो या स्वराशि का हो तो अच्छा माना जाता है।

उदा.: १) शुक्र कन्या राशि में नीचस्त का होता है, कन्या उसके मित्र की राशि है

२) मंगल चंद्रमा के घर में नीचस्त का होता है, मंगल तो चंद्र को मित्र मानता है। इस प्रकार बहुत सारे ग्रह जो है वे अपने मित्र के घर में नीचस्त के होते है। इसका अर्थ ये की उसे कमजोर तो नही मानते।

परंतु उस ग्रह के नैसर्गिक कारकत्व को सही जगह उपयोग नही कर पाते। जैसे गुरु नीचस्त का हो तो आप उसके ज्ञान को सही जगह उपयोग नही करते और आप में एक अहंकार की भावना आती है, तथा मंगल नीचस्त का हो तो आप अपना गुस्सा घर में दिखाते हो। जहाँ नही दिखाना चाहिए वहाँ आप क्रोध दिखाते है। जहाँ दिखाना है वहाँ गुस्सा दिखाते नही और शांत हो जाते है।

इस प्रकार शुक्र कन्या राशि में नीचस्त का होता है तो शुक्र अपना तेज खो देता है, नही तेज हो तो नही खोता मगर आप को ऐसे लोग पसंद आते है जो आप की क्षमता से हलके हो बुध वाले कन्या राशि वाले जीसे समाज भी कभी स्वीकार नही करते पर आपको इस तरह के लोग पसंद आते है, समाज के कई लोग कहते है की आप किस प्रकार के लोगो से संबंध बना रखाँ है। यहाँ आपका शुक्र नीचस्त का है तो आपको उन के साथ बैठने पर आनंद आता है। शुक्र नीचस्त का हुआ है तो आप की पसंद पर भी प्रश्न चिन्ह लगता है। तथा शनि नीचस्त का हो जाता है तो जहाँ महेनत करनी है वहाँ महेनत न करके गलत जगह महेनत करते हो परिणाम कुछ नही मिलता, उतार चढाव आते है।

नीचस्था का अर्थ ये नही की सारा भाव चला गया, पर उसके कारकत्व को गलत जगह उपयोग कर रहे है जिस कारण परेशानी आती है। नीचस्त ग्रह जिस भाव का स्वामी है तो वह भाव में भी कमी आती है।

पीडीत ग्रह :

कई प्रकार से ग्रह पीडीत हो सकता है। शत्रु ग्रह के साथ या शत्रु राशि में नैसर्गिक पाप ग्रह की युति में पाप कर्तरी में है। यह सब पीडीत होने की स्थिति में है। यदि ग्रह शत्रु राशि में है तो वो आसपास के वातावरण में खुश नही है।

उदा : आपका लग्नेश शत्रु ग्रह की राशि में है तो आपका यह अनुभव होता है की मै जहाँ काम कर रहा हुं या रहता है वह (वातावरण) सही नही है। फ्रेंडली नही है। ऐसा वातावरण नही मिल रहा जहाँ मेरा विकास हो। इसका अर्थ यह है कि मुझे यदि योग्य वातावरण मिल जाय तो अपनी मेहनत से ग्रोथ पा लुंगा। मुझे क्या करना है वह मै निश्चित कर सकता हुं।

अस्त ग्रह की बात यह है की आपका नाम नही होगा। आप समरर्ण कर देंगे। तथा ग्रह कारकत्व का सही जगह उपयोग न करने के कारण ख्याति प्राप्त करने में बाधा आयेगी।

जब ग्रह नीचस्त का हो जाता है तो उसके कारकत्व का गलत जगह उपयोग कर कहे है। पाप ग्रह या शत्रु ग्रह, शत्रु राशि मे या दोनो के बीच में बैठा ग्रह पीडीत होता है फिर समस्या गंभीर होती है।

पाप ग्रह या शत्रु राशि या ग्रह के बीचमें बैठे है वहां अगर शनि, राहु की दृष्टी आ गई तो नकारात्मकता आ जाती है।

लग्नेश पीडीत है तो आप के आसपास या ऑफिस के वातावरण से आप परेशान होंगे। वही ग्रह मित्र राशि में या उच्च या मित्र के साथ बैठा है तो अच्छा अनुभव करेंगे। सुविधा होगी या उस ग्रह पर शुभ ग्रहों की दृष्टी भी आ गई जैसे गुरु चंद्र की दृष्टी आ गई तो आने वाली परेशानीयों का डट कर सामना करने का विश्वास आ जायेगा।

- प्रमीला पांचाल

कूप - चक्र

मनुष्य जीवन मे हमे शुभकार्य करने के लिए शुभ मुहूर्त देखने की आवश्यकता होती है। इस मे हमे मुहूर्त - शास्त्र मदत रुप होता है।

तो चलिये आज हम जलाशय, कूप वाव या बोरींग के लिए जमीन खुदवाने का आरंभ करने का मुहूर्त देखेंगे।

कूप - चक्र

ईशान	पूर्व		अग्नि
	२५,२६,२७	४,५,६	७,८,९
उत्तर	२२,२३,२४	१,२,३	१०,११,१२ दक्षिण
	१९,२०,२१	१६,१७,१८	१३,१४,१५
वायव्य	पश्चिम		नैऋत्य

सुर्य के महानक्षत्र से चंद्र के दैनिक नक्षत्र तक गिनती करते प्रथम ३ नक्षत्र ब्रह्म स्थान मे रखे। इस नक्षत्र मे कूप खुदवाना आरंभ करने से जल की प्राप्ती जल्दी होगी। व्दितीय ३ नक्षत्र पूर्व मे रखेंगे। यह नक्षत्र मे आरंभ करने से जल का अभाव रहेगा। तीसरे ३ नक्षत्र अग्निकोण मे रखें। इस मे साधारण जल की प्राप्ती होगी। चौथे ३ नक्षत्र दक्षिण दिशा मे रखे। इस मे आरंभ करने से जल का नाश होगा। पांचवे ३ नक्षत्र नैऋत्य कोण मे रखे। इस मे अधिक जल की प्राप्ती होगी। छठ्ठे ३ नक्षत्र पश्चिम दिशा मे रखे। इस मे शुरुआत करने से मीठा जल प्राप्त होगा। सातवे ३ नक्षत्र वायव्य कोण मे रखे। इस मे आरंभ करने से नमकीन जल की प्राप्ती होगी। आठवे ३ नक्षत्र उत्तर दिशा मे रखे। इस मे मीठा और अधिक जल पाया जायेगा। नौवे ३ नक्षत्र ईशान कोण मे रखे। ये नक्षत्र मे आरंभ करने से साधारण जल की प्राप्ती होगी।

इस तरह हम जान पाते है की कोन से दिन खुदाई का आरंभ करे। कूप घर के मध्य मे बनवाने से गृहस्वामी एवं द्रव्य का नाश होता है। इसान कोण मे कूप करवाने से पुष्टि मिलती है। पूर्व मे ऐश्वर्य वृध्धी होती है। अग्निकोण मे पुत्र का नाश होता है। नैऋत्य मे गृहस्वामी की मृत्यु होने की संभावना होती है। वायव्य मे शत्रु से पीडा होती है। उत्तर दिशा मे सुख की प्राप्ती होती है।

रविवार को कूप का आरंभ करने से जल का नाश। सोमवार को अधिक जल । मंगलवार को रेत ज्यादा निकलना । बुधवार को ज्यादा जल की प्राप्ति । गुरुवार को मीठा जल प्राप्त होगा। शुक्रवार को नमकीन जल। शनिवार को जल का नाश।

जीस जगह कूप करवाना हो उसके आसपास चारो और जमीन पर कान लगाके सुनने से जहा पानी के बहने की धीमी या तेज आवाज आ रही हो उससे हमे जल कितना नीचे है वह पता चलेगा। यह कार्य हमे रात को नीरव शांती मे या सुबह होने से पहले करना है।

- जहाँ पेड से लीपटी हुई हरे रंग की लता हो वहाँ २० फीट नीचे जल पाया जा सकता है।
- जहाँ खजुर, जांबुन, नेतर, वड या उंबर के पेड हो वहा २० फीट नीचे से जल की प्राप्ती हो सकती है।
- जहाँ साग, सीसम, बेल, नीम के पत्ते सुखे हो वहाँ बहुत ही ज्यादा नीचे जमीन खुदवाने से जल प्राप्त हो सकता है।

इस तरह आज हमने देखा की कूप कहाँ, कब करवाना चाहिए। जिससे हमे अधिक एवं मीठे जल की प्राप्ती हो।

।। अस्तु ।।

संकलन : रुपल दमणीया

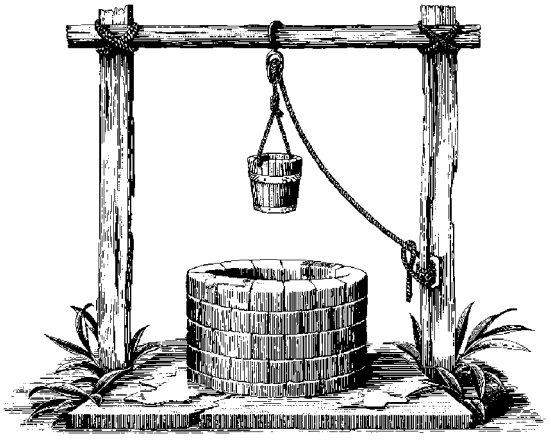

शेअर मार्केट

बाजार सदैव एक समान नही रहता है। आज जैसा कल चले, गत सप्ताह समान इस सप्ताह चले, गत माह समान इस माह चले, गत वर्ष समान इस वर्ष, गत ऋतु समान इस समय चले यह नही होता। कभी २-३ दिन मंदी या तेजी की लाईन चंद्रमा निकालता है। लगातार १२-१३ दिनो की एकतरफा चाल तेजी, मंदी, स्थिर समकी लाईन सूर्य व्दारा मिलती है। कभी यह एक माह भी चलती है।

हमारे बाजार सुबह ९.१५ से ३.३० व १० बजे से रात्री ११.३० बजे तक चलते है किंतु विश्व के अन्य देशो में बाजार इससे पुर्व और पश्चात चलते रहते है। ये बाजार ही जो रात्री पर्यंत चलते है वही दूसरे दिन का बाजार सुबह खुलने पर झटकेसे तेजी या मंदि कमोडीटी बाजार मे लाते है।

ब्रहस्पति कभी पूरे वर्ष मंदी और तेजी की धारणा देते है और बाजार उपर निचे ही चलता रहता है।

शनि लगातार तेजी ६ माह, २ साल और ५ साल तक भी उपर नीचे कर लगातार तेजी - मंदी की लगातार लाईन दे कर बाजार की संपूर्ण धारणा बदल देता है। जिसे विश्व व्यापी तेजी मंदी में बदल देता है। यह शनि भूमि और देश के व्यापार की भी धारणा बनाता है और लाईन भी इतिहास की बनाता है कंवदीती हो जाती है। सन १९९७ से भूमि मे चली तेजी ४-५ साल में भूमि के भाव जमीन से आसमान पर लेकर गई और आज स्थिति आपके सामने है। अकल्पनिय धन भूमि के कारबारीयोने कमाया। अनेको धन कुबेर देश को इस तेजीने दिये है।

बुध प्रतिमाह ही २ बार तेजी मंदी और तेजी देता है। इसका बार बार उदय और अस्त बाजारको मुद्राकोष को और बैंको को भी हिला देता है। अनेको देशोकी मुद्रा की यह गुरु ग्रह के संयोग से बहुत उपर नीचे करता है।

रुपया और डॉलर का अंतर भी यह प्रदान करता है। वैसे धन बैंक, मुद्रा पर गुरु का प्रभाव है। और वे ही इसे संचालित करते है। किंतु बुध के कारण कुछ सूचना और बाते नकली तेजी मंदि करता ही है। बुध का सबसे ज्यादा प्रभाव एग्रीकलचर कमोडीटी साधनो पर ज्यादा पडता है। बुध उदय और अस्तको अनेको ज्योतिविंद बार-बार के उदय और अस्त से मान्यता ही नही देते है। किंतु तत्काल की तेजी- मंदी देकर अनेको को आबाद और बर्बाद करता ही है। इसका असर तो होता ही है। संपूर्ण व्यापार का संचालन बुध-बुधि से ही होता है। बुध बिना किसी बातके ही बाजार को उपर नीचे मिनटों मे ले जाने की क्षमता रखता है। एक खबर मिलते ही बाजार तत्काल छलांग लगाता है और तात्काल गिरता भी है और कुछ समयमें सामान्य स्थिति पर ले आता है। बुध ठोस नही अपितु वायदे से ही उपर और नीचे बाजार को करता है। यह शेअर और वायदा सौदे को ज्यादा प्रभावित करता है।

वायदा का फायदा कब कारोबारी को करोडपति और कब कंगाल बनादे यह पता नही लगता है। इस कारण बडे कारोबारी और औद्योगिक घरानो के अपने ज्योतिष सलाहकार होते है जो पुरा विश्लेषण कर आगामी व्यापार की सलाह देते है। औद्योगिक घरानो का अपना टेकनिकल विश्लेषण भी होता है किंतु ज्योतिषिय विश्लेषण के आगे वह बौना ही है और सटीक भी नही है। मांग और पुर्ती का नियम तो आवश्यक है किंतु आजका वायदा कारोबार इतना बडा है कि वह वगैर मांगके ही मूल्य बढा देता है। एक ही दिनमे चांदी २००० से ३००० तक उपर नीचे आना आज सामान्य है।

व्यापार आज वायदे से विश्वव्यापी और इंटरनेट से संचालन के कारण मिनटो में उपर नीचे आता जाता रहता है और हाजिर के अनुसार ही चलना होता है, किंतु यहाँ भी सोना और चांदी के व्यापारमे हाजिर

मे प्रीमीयम के रुप मे मुनाफा लेना आरंभ किया हुआ है। जब मंदिमें खरीदने जाते है तब वे भाव बढाकर देते है। तेजी होने पर आप बेचने जाते है तब प्रीमीयम घटाकर आप से लेते है यह सराफा मे हो रहा है।

शेअर बाजार भी खबरो से प्रभावित होता ही है इसमे देखते ही देखते इतना अंतर आता है कि समज से परे है।

अनेको वित्तीय संस्थान और बैंक अपना मुनाफा सुनिश्चित करने हेतु इस बाजार मे पैसा लगाते है और संपूर्ण विश्लेषण पश्चात चुनिंदा शेयरो और चुनिंदा क्षेत्रो में ही यह एक साथ बहुत बडी खरीदी करते है। अनेको बडे-बडे ब्रोकरींग हाऊस भी यह ही मार्ग अपनाते है और विदेशी संस्थाओकी भी यही निती होती है। इनकी बल्क खरीदी से बाजार बढता है और बिक्री से बाजार गिरता ही है और गिरता जाता है।

रुपयेकी तेजी मंदी : विश्व व्यापार डॉलर से ही चलता है और यह भी उपर नीचे होता रहता है। भारतीय रुपया एक दिन प्रतिशत से १.०५ प्रतिशत तक उपर नीचे मिनटो मे हो जाता है। यहाँ लोग कहते ही रह जाते है रुपया गिर रहा है, बाजार सैकडो पॉईट नीचे आ जाता है। बाजार खुलते ही फिर यह और बिकवाली करते है। ईस सैंकडो हजारो करोड की बिकवाली से रुपया गिरा हुआ ही खुलता है और दिनमे बिकवाली और आने से गिरता जाता है यह क्रम लगातार चलता रहता है और रुपया गिरता जाता है।

अभी के समय मे भारतीय निवेशक भी बहुत मजबुत हुए है। ये बाजार को तुरंत संभाल लेते है किंतु इससे रुपया उपर नही आता है। यह मुख्य कारण है। कारण तो और भी अनेको है। छोटे निवेशक समज ही नही पाते और वह बाजार बढने की राह देखने मे बर्बाद होते जाते है। उन्हे कमाने के कम और बर्बाद होने के ज्यादा मौके आते है।

कुछ शेयरो की तेजी : बाजार मे समय-समय पर अलग - अलग कँपनियो और चुनिंदा क्षेत्रो के शेयर तेजीमे आते है। कुछ दिन, महिने, एक दो साल के लिए। इसका मुख्य कारण होता है संस्थाओ और दलालो व्दारा शेयरो का बताना। ये चुनिंदा शेयर ही बताते है अपने क्लांयटो को और वे खरीदते रहते है। भाव बढता जाता है और ये सलाहकार ही उन्हे एक समय एक साथ बेचने की सलाह देते है। वे अपना संपूर्ण शेयर बेच देते है। पुनः यह सलाहकार उस कंपनी और शेयर को छोडकर दुसरी कंपनी और शेयर को खरीदने की सलाह देते है। इस तरह यहा तेजी और मंदी लाते है। सामान्य निवेशक फंस जाते है। वह तेजी होने पर ही खरीदता है। उसको इस चाणक्य निती का ज्ञान नही होता है और बर्बाद होते है। भाव ज्यादा गिरने पर ये सलाहकार ही टी. व्ही. पर आकर बताते है कि आप अभी एक दो साल बने रहे बेचे नही इस तरह आप फंसे रहते है। यह चक्र पुनः पुनः दोहराया जाता है।

ग्रह ही मंदी मे तेजी देते है : ज्योतिषीय विश्लेषणव्दारा हमने गत समय मे यह तो जान ही लिया है कि बाजार को व्यक्ति नही व्यक्तिकी मानससिकता ही चलाती है और यह मानसिकता ग्रह के भ्रमण से बनती है। व्यक्ति या पुरा समाज, पुरा देश और संपूर्ण जगत इस अदृश्य शक्ति से संचालित होते है। जिनके बुध, शनि, राहु, गुरु या अन्य ग्रह आम अवस्था मे हो वह इन तरंगो को पहले ही समज लेते है और उस कार्य मे उस कँपनिमे उस क्षेत्रमें यह कार्य करते है और मुनाफा कमाते है।

कौन नुकसान उठाता है : जिन व्यक्तियोके वर्तमानमे शनि, मंगल, सुर्य व्दादश है तब सभी नुकसान उठाते है। इसमे भी मुख्य है दूसरे भावके स्वामीका व्दादश भाव मे भ्रमण, महादशा स्वामी का कमजोर होना, अंतदर्शा स्वामी का वर्तमानमें व्दादश होना और विशेष भी तब जब वह रितिकारक हो या आत्मकारक। इस समय व्यक्ति कितना भी महान हो वह नुकसान उठाता ही है, उठाता जाता है। राह पिडीत महादशा मे लग्न कमजोर होने पर और राहु की दशामे व्यक्ति दुसरों को देखकर लालचवश व्यापार मे आता है और नुकसान उठाता है। इस तरह वह पुरी तरह बर्बाद हो जाता है। हर प्रकार के व्यापार मे इस तरह की स्थिती होती है।

व्यापार मे भी पैसा फँसने पर, उधार नही आने पर, व्यापार नही चलने पर बाजार से व्यक्ति रुपया ब्याज से उठाता है। नही आने पर और उसको चुकाने के लिए बाजार से उठाता है उठाताही जाता है और एक दिन वह दिवालिया हो जाता है। यह ५ प्रतिशत के साथ व्यापार मे और ७५ प्रतिशत के साथ वायदा बाजार मे होता है। वायदा मे डुबने वालो की संख्या ज्यादा है।

डुबने वालो को सलाह : आप किसी भी तरह के घाटे मे या कर्ज मे फँस चुके है और निरंतर फँसतेही रहे है तो कुछ दिनो के लिये कारोबार को रोक दे व्यापार को रोक दे। इस स्थिती मे तत्काल किसी योग्य ज्योतीषी से सलाह ले और समझे कि यह क्यों हुआ है और यह कब तक चलेगा और आगे नुकसान का समय कितना है, फायदा होगा या नही, जो भी कारण हो वो जाने, कर्ज चुकाने हेतु फिर कर्ज न ले। यह नये उम्र के बच्चे ज्यादा करते है। उन्हे यह उत्साह होता है कि इस कार्य से तुरंत पैसा आयेगा और यह सट्टेबाजी वायदे मे आते है और उलटा नुकसान ही करते है। ज्यादा कर्ज मे होने पर कभी भी वायदा बाजार और सट्टा चाहे क्रिकेट हो या अंकोका कदापी न करे।

क्या करें : बाजार के लोगो की राय अवश्यही ले किंतु सदैव अपनी मानसिकता से ही व्यापार करे सलाह अवश्य ले।

ज्यादा नुकसान होने पर : अपनी कुंडली किसी ज्योतीष को बताये और रुकावट और घाटे के ग्रहोको जानकर उनकी पूजा, जाप, अनुष्ठान करवाये।

कब व्यापार करे : आपके महादशा स्वामी के राजयोगकारी समय मे और महादशा स्वामी से अंतःदशा स्वामी एकादश, नवम, पंचम, दशम मे होने पर अच्छा लाभ लगातार मिलता है। यह आपको वैदिक ज्योतिष के विद्वान से जानना चाहिए।

वायदा तत्काल कब न करे : वायदे मे उत्साह से कार्य न करे। अनेको को यही बताया जाता है और यह ही मानसिकता ब्रोकर बताते है की जब मंदी हो तो खरीदो और जब ज्यादा ऊंचा बाजार हो तब बेच दो। यही उचित भी है किंतु मंदी की अंतिम मंदी स्थिती वही हो या तेजी की अंतिम स्थिती वही हो यह समज नही आने से इसमे भी सैकडो लोग फंसते है,वायदा व्यापार की गिरावट ५%,१०%, २०%, ५०%, ६०% तक भी हो जाती है। कोई भी गिरावट अंतिम नही होती । बहुत सोच समजकर विश्व व्यवस्थाको जानकर सलाहकारसे सलाह लेकर कार्य करे। आज संचार माध्यमो और विश्व व्यापार होने के कारण सभी जगह भाव एक समान वायदा के होते है। हाजिर मे भावके अनुसार अंतर आता है और यह होता है की एक क्लीक पर सौदा हो रहा है और बस दबने के बाद कुछ नही होता । आज वायदा व्यापार एक शब्द का ही है। खरीदलो या बेच दो, बस निर्णय के समय से किसी भी देवता का सुविधानुसार अपने कुल परंपरानुसार नित्य मंत्रजाप करें और लाभ उठाये।

भाग्योदयकारी स्त्रोत : व्यापार लाभ हेतु श्री सुक्तअदितिथ है साथ ही कनकधारी स्त्रोत व पुरुष सुक्त प्रमुख है। त्रिपुरी सुंदरी स्तोत्र पुजन, षोडशी मंत्र प्रमुख है। आपको उचित लगे वो करें।

धन्यवाद

डॉ. हरीलाल मालदे

दैनिक जिवन में हस्तरेखा ज्ञान का उपयोग

रोज : हस्त रेखा : जिवन में हस्तरेखा ज्ञान का उपयोग :

आज हम बात करेंगे की किसी भी जातक को अगर हस्तरेखा को जानना है तो उसको इस विधी को अपने रोजमर्रा के व्यवहार में इसे लाना चाहिये। अगर हम अपनी नजर अपने चारो और लगायेंगे तो हमे कई तरह के अलग - अलग प्रकार के लोग दिखेंगे और हमे अपने अभ्यास के लिये बहुत सारे हाथ दिखाई देगें। कीसी का हाथ लंबा तो किसी का छोटा, किसीकी उंगलिया छोटी होगी तो किसी का अंगुठा अलग प्रकार का होगा। सभी के हाथ अलग - अलग प्रकार के होंगे और मजेदार बात यह है की हम उस जातक को बताये बगेर उसके बारे मे जान सकते है। हस्तरेखा के विद्यार्थीयोंको यह सब बाते निरंतर अभ्यास से जल्दी से समझमें आ जाती है। यह सब बाते मे से कुछ बाते आप उसके नजदिक जाये बगेर जान सकते है।

१) अंगुठे का प्रथम पर्व बहुत ज्यादा लंबा हो तो : ऐसा जातक निरंकुश शासक, अनियंत्रित होता है। यदि ऐसे लोगो से कार्य निकलवाना हो तो हमें उनके सामने विनम्र बनना पडेगा क्योंकी ऐसे लोग खुदकी प्रशंसा सुनना ज्यादा पसंद करते है। तो उनकी प्रशंसा करने से हमारा काम आसान हो सकता है।

२) अंगुठे का प्रथम पर्व मध्यम आकार का हो तो: यहाँ मै यह बताना चाहुंगा की प्रथम पर्व ज्यादा मोटा या ज्यादा पतला न होते हुए साधारण - मध्यम आकार का हो तो जातकमें असहकार की भावना ज्यादा होती है। इस लिये ईनसे बात करते समय सावधानी बरते।

३)अंगुठे का प्रथम पर्व बहुत छोटा हो तो : ऐसे व्यक्ति दुर्बल ईच्छा शक्ति वाले होते है। जल्दी से निराश होने वाले, ईनमे निर्णयात्मक शक्ति कम होती है। इसलिये जल्दी से कीसी निर्णय पर नही आ सकते पर ऐसे व्यक्ति के सामने अपनी उर्जा या बल का प्रयोग करने से हम अपना काम आसानी से निकाल सकते है। यदी कीसीका अंगुठा छोटा हो तो हम अपनी बात पर अडे रहे तो हम उससे अपनी बात अतत: मनवा ही सकते है।

४) अंगुठे का प्रथम पर्व छोटा हो और मोटा भी हो : तो ऐसे व्यक्ति की इच्छाशक्ति दृढ होती है और यदि ज्यादा फेला हुआ भी हो तो यह मुर्खता की निशानी है। ऐसे लोगो की हा मे हा मिलाने से हमारा काम बन जाता है।

५) अंगुठे का प्रथम पर्व फैला हुआ और गोल भी हो तो : जातक हटधर्मी होता है। इसीलीये हमें शाति से काम लेना चाहिये। क्योंकी ऐसे जातक जरासी बात पर गुस्सा करने लगते है। यदि हम अपनी बातपर अडे रहे तो उसको आखिर में झुकना पडता है।

६) अंगुठा थोडासा पिछे की तरफ झुकता हो तो : व्यक्ति उदार मन वाला होता है। इनके सामने कोई दु:ख भरी कथा सुनाने से वह आपकी बात अवश्य सुनेगा, यदि आपकी आवाज में सच्चाई होगी तो वह आपको जरुर मदद करेगा।

७) अंगुठे का दुसरा पर्व मोटा और लंबा हो तो : ऐसे व्यक्ति में सामान्य ज्ञान पर्याप्त मात्रा में होता है। इनके साथ बात करते समय यह ध्यान रखें की अपनी बात संक्षिप्त में करें और इनका समय नष्ट न हो इस बात का ध्यान रखें।

८) अंगुठे का दुसरा पर्व छोटा और पतला हो तो : यदि दुसरा पर्व छोटा हो तो इसका मतलब पहला पर्व लंबा होगा जिसके कारण उसकी ईच्छाशक्ति चरमसीमा पर होगी। ऐसे लोग विवेकपूर्ण बात सुनना पसंद नही करते इस लीये सावधानी बरते।

९) उंगलीयो के बीच मे गांठ न हो तो और उंगलिया अधीक पतली हो तो : इसके साथ उंगलीका उपरका भाग नुकीला हो तो जातक के विचार रहस्यमयी होते है। वह आध्यात्मिक विषय पर बात करना ज्यादा पसंद करते है। इसलिये उनके शोख पर बात करने से अपना काम आसान होता है।

१०) उंगलीया बहुत ज्यादा नुकीली हो तो : जातक झुठ बोलनेवाला होता है। अपने व्यवहार में निरंतर परीवर्तन करने वाले होते है। ऐसे व्यक्ति के सामने अपनी बडाई का प्रदर्शन जोर शोर से करना चाहिये।

११) उंगलीया छोटी हो और नाखुन खंडीत हो तो : जातक अत्याधिक गुस्सेल होता है। खुद को श्रेष्ठ मानने वाले दुसरे को निचा दिखाने वाले होते है। ऐसे व्यक्ति से बात करते समय यह ध्यान रखना चाहिये की उनको बिचमे टोकना नही और उनको अपनी बात पूरी करने देना चाहिये।

१२) उंगलीया वर्गाकार हो तो : जातक सत्यनिष्ठ और बुध्दीमान होता है। इनके साथ बात करते समय विनम्रता से बात करनी चाहीये। अपनी बात संक्षिप्त मे बताये।

१३) चमच आकार उंगलीया : ऐसे व्यक्ति स्वतंत्रता प्रेमी होते है। इसलीये इनके सामने खराब व्यवहार की निंदा करनी चाहीये। इनको खेलकुद बहुत ज्यादा पसंद होता है। तो इनको प्रसन्न करने के लिये स्पोर्टस की बात करने से जल्दी से आपके मित्र बन जाते है और उनको घुमना भी पसंद होता है। तो जो विषय स्पर्धात्मक हो उस पर बात करने से वह खुश होते है।

१४) अत्याधिक चमचाकार उंगलीया : ऐसे व्यक्ति नास्तिक होते है। इनसे अधिक समाजवादी या तानाशाह बनकर बात करनी चाहीये। अन्यथा वह आपकी बात नही सुनेगा ।

१५) हर एक उंगलीयों में गांठ हो तो : ऐसे जातक दार्शनिक विचार वाले होते है। इसीलीये इनके सामने अपनी कीसी भी समस्या बताने में संकोच न करना, सलाह अच्छी मिलेगी।

१६) उंगलीया अधिक लंबी हो तो : इनको हर बात को लंबी कर के बताने की आदत होती है। ऐसे जातक आपका ध्यानपूर्वक निरीक्षण करने वाले होते है। इनके पास जाने से पूर्व तैयारी करके तैयार होकर जावा चाहीये क्योंकी ऐसे व्यक्ति सिर्फ ऐसे ही व्यक्तियों का सन्मान करते है।

१७) उंगलीयों पर गांठे न हो तो : ऐसे व्यक्ति जल्दी से प्रभावीत हो जाते है। आपकी अधुरी बात वह पुरी तरह समज जाते है। इनके साथ शिघ्रता से बात करनी चाहीये।

१८) अनामिका चमचाकार हो तो : जातक सुंदर वस्तुओं के चाहक होते है। प्रकृति प्रेमी और इनके सामने चित्रकारी, संगीत, शिल्पकला और साहित्य की बात करनी चाहीये।

१९) अनामिका मध्यमा जीतनी लंबी हो तो : जातक जुआरी होता है और व्यवसाय में कीसीभी तरह का जोखीम उठाने को तैयार होता है।

२०) अंगुठा ज्यादा लंबा हो तो :- यदि अंगुठा तर्जनी के तिसरे पर्व तक या उससे अधिक लंबा हो तो आपको अपनी बात मनवाने के लिये उसे समझाने की ज्यादा मेहनत करनी पडेगी, वो जल्दी से मानने वालो में से नही होते।

संकलन

जयेश वाघेला

ताजिक शास्त्र में त्रि-पताका चक्र का प्रयोजन

होरा शास्त्र के अंतर्गत भारतीय ज्योतीष के फलित में ५ विभाग आते है।

१) जातक ज्योतिष

२) ताजिक ज्योतिष

३) मुहुर्त ज्योतिष

४) प्रश्न ज्योतिष (स्वर, शुकन ज्योतिष)

५) संहिता ज्योतिष

ताजिक ज्योतिष : जातक के जीवन में प्रत्येक नवीन वर्ष का ज्ञान, तदनुसार, वर्ष कुंडली व्दारा, वर्ष पर्यन्त प्रत्येक मास, प्रत्येक दिन तथा दिनार्थ से भी सुक्ष्म समय का शुभाशुभ ज्ञान ताजिक ज्योतिष है।

हम यहाँ ताजिक ज्योतिष में उपयुक्त **त्रि-शलाकां वेध चक्र** (त्रिपताका - त्रिपताकी) चक्र के बारे में जानेंगे। त्रिपताका चक्र, ताजिक ज्योतिष में चन्द्रमा पर शुभाशुभ ग्रहों का वेध देखने के काम आता है। यह राशि - आधारित है और इसी को त्रिपताकी या त्रि-शलाका वेध चक्र भी कहते है। वेध भी एक तरह से दृष्टी ही है।

त्रि-पताका चक्र की रचना तीन खडी तथा तीन आडी समान्तर रेखाओं से, नीचे दी गई आकृती व्दारा की जाती है। इन ६ रेखाओं से १२ बिन्दु मील जायेंगे, जो वर्ष लग्न कुंडली के १२ भाव को निर्देशित करेंगें। खडी रेखाओं को थोडा और उपर बढाकर उन पर पताकायें बना दें। त्रि-पताका चक्र तैयार हो गया।

वर्ष कुंडली के भावो का अंकन : खडी रेखाओं के बीच वाली रेखा पर वर्ष कुंडली की लग्न राशि लिख दे। अन्य राशियां घडी की सूईयों के विरोधी क्रम में अन्य बिंन्दुओ पर क्रमशः लिख दे।

ग्रहों की स्थापना : त्रिपताका चक्र में वर्ष कुंडली के ग्रह अंकित नहीं किये जाते, किंतु जन्म कुंडली के ग्रहो को संसाधित करके लिखा जाता है। जिसकी पध्दति यह है :

चन्द्रमा :- $\frac{\text{गत वर्ष} + १}{९}$ = शेष के अनुसार

(गत वर्ष :- जातक ने पूर्ण किये हुए आयु के वर्ष)

गत वर्ष में एक जोड कर नौ का भाग दे। चंद्रमा की जन्म कुंडली की राशि से, शेष जितना आगे गिनने पर जो अंक आये वो राशि में त्रिपताका चक्र में चन्द्र को लिखदे।

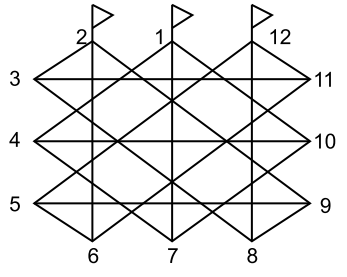

।। त्रि - पताका चक्र ।।

मंगल, राहु, केतु : गत वर्ष + १ = शेष समान जन्म

६

की स्थिति से आगे बढाकर लिखे। मंगल को आगे बढाये तथा राहु-केतु को पिछे की और बढायें। कुछ विद्वानों का मत है की वक्री ग्रह को भी पीछे की तरफ अग्रेषित करना चाहिए।

शेष पांच ग्रह अर्थात सूर्य, बुध, गुरु, शुक्र और शनि : इन ग्रहों के लिए

गत वर्ष + १ = शेष तुल्य

४

जन्म की स्थिति से आगे बढकर लिखे।

इस तरह सभी ग्रह त्रि-पताका चक्र में अंकित हो जायेंगे।

त्रि-पताका चक्र में जिस राशि में चंद्र स्थित है उससे सरल रेखा तीन तरफ जाती है। उन सरल रेखाओं के छोर पर अशुभ ग्रह स्थित हो तो वो अपने प्रकार की बाधाए लाते है और शुभ ग्रह हो तो उसी प्रकार के शुभ फल जातक को प्राप्त होते है। यदि चंद्र पर राहु या अन्य पापी ग्रहों का वेध हो और साथ ही शुभ ग्रहों का भी वेध हो तो ऐसी स्थिती में अशुभ प्रभावों में कमी आती है।

अब पृथक-पृथक ग्रहों का चन्द्र पर वेध देखते है :

सूर्य : चंद्र पर जिस वर्ष सूर्य का वेध होता है उस वर्ष जातक को ज्वर-बाधा, पित्त-प्रकोप, चिंता व आशाओ में असफलता प्राप्त होती है।

मंगल : मंगल का वेध रक्त-चाप, रक्त-विकार, मानसिक रोग, चिंता, उद्वीग्नता, चोट, घाव, दुर्घटना, शस्त्र क्रिया का फल देता है।

बुध : बुध्धि विकास, धन प्राप्ति तो देता है, किंतु साथ ही अपनों से कलह, शत्रुभय, मति भ्रम, स्नायु रोग भी देता है।

गुरु : धन प्राप्ति, धर्म-लाभ, तीर्थ यात्रा, सुख - शांती, संतान प्राप्ति या संतान की ओर से सुख, मकान बनाना, सामाजिक उन्नती जैसे शुभ फल देता है।

शुक्र : वाहन सुख, स्त्री सुख, लाभ, विजय, राज्य कृपा, भौतिक इच्छाओं की पुर्ति होती है। कभी-कभी इच्छाओं की अधिकतासे मन अशांत भी होता है।

शनि : नीच लोगों की संगत, नीच प्रवृत्ती, क्लेश, संताप, वायु विकार, निराशा का फल मिलता है।

राहु : कीर्ति-क्षय, परेशानी, दूषित-विचार, पकड में न आने वाले रोग, कार्य-नाश आदि होता है।

केतु : मंदाग्नि, पेट दर्द, अनेक प्रकार के दु:खो की प्राप्ति, निराशा, कोई काम में मन न लगना जैसे फल मिलते है।

.....संकलन

स्वप्निल कोटेचा

ज्योतिष और रोग

इस ब्रह्मांड में यत्पिण्डे तद्र ब्रह्मांड, के सिध्दांत के अनुसार हर एक वस्तु एवं पदार्थ का प्रभाव एक दुसरे पर पड रहा है। जब कोई जीव माँ के पेट से बाहर आता है तो उसी क्षण उस पर बह्मांड के प्रभाव की छाप पड जाती है। वह व्यक्ति के व्यक्तित्व में ठीक वही बह्मांडीय गुण-दोष आता है, जो गुण दोष उसके जन्म समय प्रकृति के उसके जन्म स्थान में पाये जाते है। फिर ये गुण दोष व्यक्ति के जीवन में अलग अलग समय पर प्रकट होते है, गोचर तथा दशा के हिसाब से।

हमारे प्राचिन ऋषि मुनियो ने गहन अध्ययन करके हमे बताया कि मनुष्य के जीवन में घटने वाली घटनाए और शरीर के अंदर होने वाली बिमारीयो को हम जन्म कुंडली के माध्यम से जान सकते है। जन्मकुंडली के १२ भाव, १२ राशी, २७ नक्षत्र एवं ७ ग्रह, २ छाया ग्रह और आधुनिक खोजा गया हर्षल, नेपच्च्युन, प्लुटो का सही संतुलन करते हुए कुछ नियमोंको ध्यान मे रखते हुए हम किसी की भी कुंडली का मेडिकल विश्लेषण कर सकते है।

जानलेवा बिमारी जैसे हार्ट-अटैक, ब्रेन हेमरेज और केन्सर पर बात करते हुए सूर्य से संबंधित बिमारी सोडीयम डेफिसेंसी के बारे में भी बताएगा। जन्मकुंडली का मेडिकल विश्लेषण करने के लिए पहले कुछ जरुरी ज्योतिष नियमो का उल्लेख करना जरुरी है।

१)जन्म कुंडली देखते वक्त ग्रहों की महादशा, अंतर्दशा, प्रति अंतर्दशा और गोचर ग्रहो की स्थिति को ध्यान से देखा जाए तो एक बिमार व्यक्ति ठीक होगा की नही, रोग अल्प दिनो का है या दीर्घकालिन यह पता लगाया जा सकता है। एक के बाद एक बुरी दशाये आ रही हो तो बिमारी लंबी चलेगी बिमारी मे जटीलताये एवं परेशानिया आयेगी। अगर बुरे ग्रह की दशा के बाद अच्छी शुभ दशा आ रही हो तो रोगी ठीक हो जायेगा।

२) अगर रोग आ ही गया है तो जन्मकुंडली मे बचाने वाले कारणो को ढूंढना चाहिए जैसे केन्द्र - त्रिकोण मे शुभ बलवान ग्रह, अष्टमेश की बलवान स्थिति और सबसे जरुरी लग्न लानेश की बलवान स्थिति। अगर लग्नेश कुंडली में बलवान है तो व्यक्ति की आनुवांशिक, पैदायशी ताकत दिखाता है। ऐसे में रोगी बच सकता है अगर लग्नेश ६, ८, १२ भावोमे या पापी ग्रहो के प्रभाव मे त्रिषडाय मे हो तो लग्नेश की महादशा स्वास्थय की दृष्टी से बहुत बुरा फल देती है। त्रिषडाय भावो मे पाप ग्रहो का प्रभाव होता है उस अनुसार जातक को रोग भोगने पडते है। कौन से अंगो को कौन से भाव से देखा जाता है इसकी चर्चा भी बाद में करुंगा।

३) मान लिजिए कोई बुजुर्ग व्यक्ति बीमार है और उनकी कुंडली नही है तो उनकी पहली संतान की कुंडली मे नवम भाव को पिता का लग्न स्थान मानकर बिमारी का सही विश्लेषण किया जा सकता है। इसी प्रकार जातक की पत्नी, संतान आदि की जान सकते है। उत्तर सही मिलेगा अगर परिवार का एक सदस्य बिमार है तो उनकी पत्नी, सभी संतानो की कुंडलीया मे भी वो रोगी दिखेगा और ऐसे मे जातक का बचना मुश्किल हो जाता है।

४) शरीर मे रोग, शनि, राहु, केतु, सूर्य, मंगल और ६-८-१२ भावो के स्वामी ग्रहो के प्रभाव से होते है जैसे लग्न, लग्नेश यादि मंगल राहु से पापयुक्त या पापदृष्ट हो तो इनकी महादशा अंर्तदशा में ब्रेन हेमरेज जैसा रोग और फिर मृत्यु भी हो सकती है। लग्न भाव और लग्नेश क्योंकी सिर को प्रतिनिधित्व करते है, इसलिये मंगल ब्लडप्रेशर बढाते हुए राहु की वजह से अचानक ब्रेन मे नसो को नुकसान पहुँचाकर हेमरेज करवा देता है। किसी भी कुंडली का चेकअप करते समय राहु को ध्यान से चेक करे क्योंकि यह ग्रह अकस्मात, बिमारी

देने का कारक है। पुत्र की कुंडली मे यदि सूर्य राहु से द्रष्ट या युति करता है तो इसकी दशा, अंतर्दशा मे पिता की अकस्मात मृत्यु हो जाती है। जब जब सुर्यग्रहण आता है या इसके आसपास वृध्ध व्यक्ति यो की मृत्यु दर बढती है। हार्ट फेल, हार्ट अेटेक, कैंसर जैसी बीमारीयोने राहु केतु की मुख्य भूमिका है। अगर कालपुरुष की पाँच नंबर की सिंह राशी, सिंह राशी का स्वामी सूर्य, पाँच नंबर भाव और पाँच नंबर भाव का स्वामी ये चारो ह्यदय को दर्शाने वाले तथ्य यदि राहु- केतु के प्रभाव में पायें जाये और पंचमभाव का कारक गुरु भी पाप प्रभाव में होकर निर्बल हो तो हार्ट अेटैक होगा ही। कब होगा यह महादशा देखकर मालूम पडता है। उदाहरण स्वरुप कुंडली देखे।

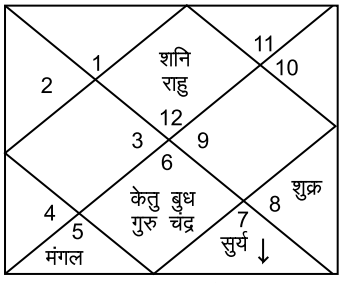

यह व्यक्ति को हार्ट अेटैक हुआ और बाईपास सर्जरी हुई तब गुरु-राहु चल रहा था लग्नेश की दशा, गुरु कमजोर, पंचमभाव राहु से पीडीत, साथ मे वो शनि के किरणे भी लेके गया. जो एकादश और व्दादश का स्वामी शनि है। छठ्ठे से छठ्ठा भाव का स्वामी है। पंचमेश चन्द्र भी राहु शनि के प्रभाव में आया, पंचम राशी का स्वामी सूर्य ह्यदय का कारक है वो अष्टम भाव में नीच का होकर बैठा है। पंचम राशि मंगल से पीडीत है, पंचम भाव का कारक गुरु शनि, राहु से द्रष्ट है वो अत्यंत कमजोर है। इसी प्रकार सुदर्शन कुंडली से चेक करे तो भी उत्तर सटीक बैठता है। इस कुंडली में अगर चंद्रकुंडली से भी पंचम भाव को देखे तो पंचम भाव का स्वामी बनता है जो राहु से युति कर रहा है।

उपाय : अगर यह व्यक्ति पहले से कुंडली दिखाते है तो इन ग्रहों के उपाय कर सकते थे जैसे सूर्य ग्रह के जाप, राहु के दान, गेहु का दान, विष्णू भगवान की पूजा, सूर्य और पिता को रोज प्रणाम करना, मोती पहनना।

५) **सूर्य :** हरेक ग्रह अपने गुण दोषो के अनुरुप हमारे शरीर मे बिमारीया उत्पन्न करते है। सूर्य ह्यदय रोग, सिरदर्द, आंखो की कमजोरी, गंजापन, उच्च रक्तदाप, लू लगना, त्वचा, कैंसर, हड्डीयाँ मे टी बी (सूर्य-राहु) हड्डी का बार-बार टुटना, तेज बुखार, सोडियम तथा विटामीन डी की कमी।

चंद्र : पानी के रोग, सर्दी जुकाम, कफ, एलर्जी, न्युमोनिया, अस्थमा, जलोदर, डीहाईड्रेशन, मानसिक बिमारीया, सास के रोग, रक्त का कैंसर, सूनी दस्त - उलटीया, हिस्टीरीया, मूत्र रक्तदोष, आंखो की बिमारी, औरतो मे मासिक धर्म संबंधी, आंत मे कीडे, छाती के रोग, ज्यादा दारु पीकर मौत इत्यादी।

मंगल : श्वर, छोटी माता, आग से झुलजना, जखम, फोडे, फुन्सी और अेक्सीडन्ट, रक्त स्त्राव, अंगो का कट जाना (विकलांग) उच्च रक्तचाप (गुस्से की वजहसे), दिमागी बुखार, टाईफाईड, ब्रेन हेमरेज

बुध : मानसिक कमजोरी, वाणी संबंधित रोग, त्वचा संबंधी रोग, बहरापन, नपुंसक, कमजोर, तथा नीचत्व हो तो कफ, वात पित्त से संबंधित, त्वचा का कैंसर, पित्ताशय के रोग.

बृहस्पति : पीलीया, मधुमेह, लीवर, पाचन संबंधी रोग, ट्युमर, फोडा, संग्रहणी, ड्रोप्सी, जुलाब

शुक्र : यौनरोग, बिस्तर गीला करना, मूत्र संबंधी विकार, गर्भाशय संबधी रोग, चेहरे के विकार

शनि : लकवा, हाथ पाँव की और ग्रंथीयाबीमारीया, जैसे थाइरोइड, जोडो का दर्द, गठिया, किडनी मे स्टोन, नसो की बिमारीया

राहु - केतु : पागलपन, पेट मे छाले, आंतो की बिमारी, फुंसिया, अत्याधिक दर्द, कैंसर कही भी, कोई भी ग्रह इनके प्रभाव मे हो तो उस अंग से संबंधित समस्या, कीडे, साप का काटना, बीमारी का पता न लगना, मच्छरों से फैलने वाली बिमारीया जैसे डेंगु, मलेरीया, वाइरस सबंधि रोग, जैसे स्वाईन फ्लु, बुरे स्वप्नों या बेवजह डरना, फोबीया इत्यादी.

ब्रेन ट्युमर में कैंसर एक असाध्य रोग है, इस रोग मे राहु- केतु और गुरु को चेक करना जरुरी है, अगर लग्न, लग्नेश और गुरु पाप प्रभाव मे दिखे तो ब्रेन ट्युमर और उसमे कैंसर होने की संभावना बढ जाती है, मंगल को भी देखें क्योंकी ट्युमर का ऑपरेट और कीमो थेरेपी मंगल देगा। गुरु चर्बी का कारक है, इसलिए गांठ बनाता है।

सोडीयम की शरीर मे कमी एक जान लेवा बीमारी है। नमक मे सोडीयम पाया जाता है। शरीर मे सोडीयम की अपूर्ती केवल नमक से ही होती है। नमक ज्यादा खाने से बी. पी. बढ जाता है और नमक शरीर मे कम होने से सोडीयम कम हो जाता है। जिससे व्यक्ति कोमा मे या मृत्यु हो जाती है। उस रक्तचाप दवा से नियंत्रित हो जाता है। किंतु सोडीयम की कमी को दुर करने के लिये सिर्फ नमक की टेबलेट खानी पडती है। यह नमक मे सूर्य तत्व है क्योंकी जब सूर्य की रोशनी से समुद्र के पानी को सुखाया जाता है तो नमक बचता है तो सोडीयम क्लोराईड ही है जिसे सोलार सोल्ट कहते है।

यही नमक को सूर्य के व्रत मे यानि रविवार के व्रत मे नही खाते। सूर्य ग्रह के उपचार स्वरुप हमारे ऋषि मुनियो की ज्ञान की परीकाष्ठा देखिये, एक कुंडली के माध्यम से कि कैसे सूर्य कमजोर होने से जातक को यह बिमारी की वजह से १५ दिन बेहोश रहना पडा।

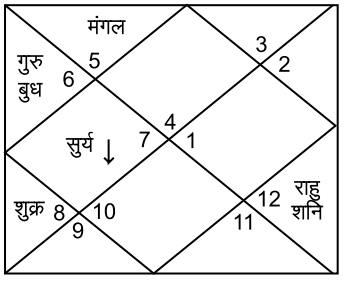

इस जातक के पिता का क्लेश सूर्य बनाता है (नवम से ६ ठ्ठा) जो पिता के अष्टम भाव यानि चौथे भाव मे नीच का होकर बैठा है। अष्टम भाव से मूत्राशय भी देखते है।

इन सज्जन के जब गुरु और शुक्र मे शुक्र आया तो पिता को सोडीयम की कमी हुई और १५ दिन बेहोश रहे। पूछने पर पता लगा की पिछले एक हप्ते से नमक छोडे रखे है। आर्येवेदिक इलाज करवा रहे थे, शुक्र पर राहु की और मंगल की दृष्टी थी, जो पेशाब के माध्यम से नमक की कमी पैदा कर रहा था। आज वो खतरे से बाहर हैं किन्तु उन्हे समय-समय पर मूत्रांग संबंधि समस्याए आती रहेगी।

इससे जान सकते है की मेडिकल टेस्ट के साथ साथ अगर मरीज की जन्मकुंडली भी चेक कर ली जाय तो उचित फैसला कर सकते है, जैसे ऑपरेशन करना है की नही, रोग के हिसाब से दान, पुण्य, उपाय भी कर लेने से रोगी जल्द ठीक हो सकता है।

धन्यवाद

डॉ. हरीलाल मालदे

दाम्पत्य जीवन के लिए योग

शादी का मतलब होता है कि आपके परिवार मे एक नए व्यक्ति का आगमन होने वाला है, जो आपके परिवार के विकास को एक अलग तरीके से दर्शाता है। इस व्यक्ति की उनती किसी वादे या समझौते से होती है जिस पर सप्तम भाव की दृष्टी होती है। और यह जातक को स्थायी मित्रता, सुख और लाभ देता है जो की भाव एकादश से देखा जाता है। इसलिये वैवाहिक जीवन के लिए आपको २ रे, ७ वे और ११ वे भाव को देखना चाहिए।

यहाँ आप शादी करने या न करने का वादा, जीवनसाथी का विवरण, उसका रुप-रंग या उसकी आजीविका आदि की जानकारी प्राप्त कर सकते है। शादी कब होगी ? वैवाहिक जीवन कैसा रहेगा ?सुखी एवं समृध्द दाम्पत्य जीवन, प्रेमहीन दाम्पत्य जीवन, दुखी दाम्पत्य जीवन या विवाह के बाद अलगाव आदि।

यदी कुंडली में निन्मलिखित योग हो तो व्यक्ति का विवाह उपयुक्त आयु में होता है :-

१) चंद्रमा और शुक्र यदि उपजाऊ राशियाँ हैं - वृषभ, कर्क, वृश्चिक, मीन और धनु।

२) उपरोत्क में से किसी एक राशि में भावना को शिखर पर रखा गया हो।

३) बृहस्पति या शुक्र २ रे, ७ वे, ११ वे भाव में स्थित हो।

४) बृहस्पति - चंद्रमा १, ५ , १०, ११ वे भाव में स्थित हो।

५) शुक्र - चंद्रमा १, ५, १० ११ वे भाव में स्थित हो।

६) चंद्रमा और शुक्र पर शनि की दृष्टी नहीं है और यदि मौजुद है तो ये दोनो ग्रह शनि से अधिक बलवान है।

७) लग्नेश और सप्तमेश की युति केंद्र या त्रिकोण में हो।

८) लग्नेश और सप्तमेश ३ रे, ११ वे और ५ वें भाव में या एक - दुसरे के भाव में हो।

९) संबंधित स्थानों के स्वामी लग्न या चंद्रमा से दूसरे, सातवे या ग्यारहवे घर में हो।

१०) २ रे, ७ वे, ११ वे घर के स्वामी शुभ घरों में स्थित है और कारक से संबंधित हो।

११) कारक सप्तम भाव में लग्न और सप्तमेश मजबूत और अच्छी स्थिति में हो।

१२) शुक्र मूल राशि मे हो या उच्च का तथा सप्तमेश भी शुभ हो या ५वे, ११ वे स्थान में हो ।

१३) सप्तम भाव में बुध और सप्तमेश हो।

१४) सप्तमेश लाभ भाव में और शुक्र द्वीतिय भाव में हो।

१५) लग्न स्थान में शुक्र और सप्तम भाव में लग्न।

१६) लग्नेश और सप्तमेश का परिवर्तन योग जो मदन गोपाल योग बनता है।

१७) सप्तमेश शुक्र द्वीतिय भाव में युति में हो।

१८) लग्नेश कर्मस्थान में हो और धनेश लाभस्थान में हो।

१९) धनेश और लाभेश परिवर्तन योग कर रहे हो।

२०) सप्तमेश और धनेश लाभ स्थान में युति में हो।

सायन ज्योतिष के अनुसार चंद्रमा और शुक्र २ रे, ५ वे, ७ वे, ११ वे भाव में हो और वार या इससे अधिक राशि के जन्मकालीन ग्रहों के साथ शुभ संबंध में आए।

स्त्री की कुंडली में सूर्य और शुक्र विवाह भाव में है और अन्य शुभ ग्रहो की दृष्टी है।

विवाह प्रारंभ होने में विलंब होना।

१) शनि लग्न या चंद्रमा से १, ३, ५, ७ या १० वे घर में है या अपनी कारक स्थिति में नही है।

२) मंगल अष्टम भाव में हो।

३) चंद्रमा और शनि युति में और विशेषकर १, २ या ११ वे भाव मे हो।

४) मंगल और शुक्र ५ वे, ७ वे, या ९ वे घर में है और बृहस्पति या यूरेनस उन पर दृष्टी डाल रहा है।

५) सप्तमेश और शुक्र शनि से दृष्ट है।

६) चंद्रमा और शुक्र, बृहस्पति और यूरेनस (हर्शल) केंद्र में हो.

जब शनि चंद्रमा और शुक्र किसी प्रकार से चंद्रमा के संबंध में आ जाता है तो विवाह होने या रिश्ता तय होने या यहां तक कि विवाह में भी कुछ समस्याए या कठीनाईया आने की संभावना रहती है। हालांकी शनि-चंद्र के इस संबंध के कारण विवाह में देरी होती है, लेकिन अंत में इनका वैवाहिक जीवन एक अच्छे पति या पत्नी के साथ व्यतीत होता है।

नितिन भट्ट

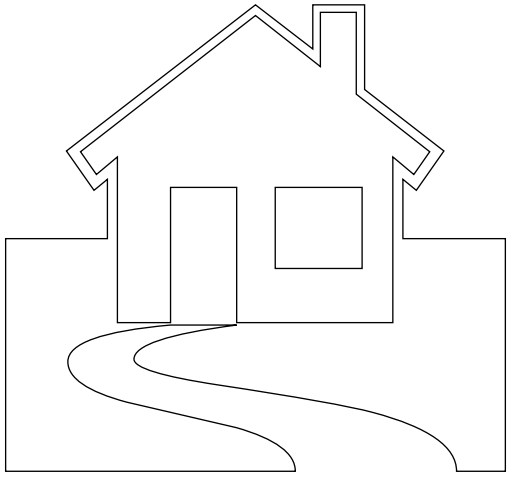

श्रीमद भगवद गीता - कर्मयोग

श्रीमद भगवद गीता का अर्थ क्या ?

श्री याने प्रकाशित और मद याने उन्मत्त होना ।

सृष्टि की रचना करने के लिए परमात्मा प्रकृति से जुड़कर उन्मत्त हो गए, इसलिए उसने अपने लिए "मद" शब्द का प्रयोग किया । भगवद का अर्थ है भगवान की प्राप्ति और गीता का अर्थ है गीत ।

तो इसका मतलब है कि प्रकाशित परमात्मा के द्वारा भगवान की प्राप्ति के लिए गीत के रुप में प्रस्तुत किया गया ज्ञान है।

प्रथम अध्याय "अर्जुन विषाद योग" और अंतिम अध्याय "मोक्ष सन्यासी" है।

हमारा जीवन दु:ख से शुरु होता है। एक बच्चा दु:ख, दर्द और रोने के साथ पैदा होता है। विषाद से शुरु करके मोक्ष के लक्ष्य तक पहुंचना जारी है।

अब विषाद से मोक्ष तक ही यात्रा गणित है और यह वास्तविक ज्योतिषशास्त्र है।

पहला श्लोक धर्मक्षेत्र कुरुक्षेत्र .... मेरे और पांडव पुत्र युद्धभूमिमे क्या कर रहे है से धृतराष्ट्र का प्रश्न से शुरुआत है - जिधर मेरा और तेरा आ जाता उधर से वास्तव में विषाद की शुरुआत होती है।

तो दरअसल धृतराष्ट्र को विषाद के साथ पहले स्थान पर रखा गया है।

प्रथम धृतराष्ट्र को तमस विषाद कहा जाता है।

दुर्योधन का रजस विषाद और जब रजस काम करे तब पता नहीं चलेगा कि वो दु:ख दे रहा है। अंत में उसे कष्ट रहेगा। तमस क्षण - क्षण दु:खदायी है।

और जो सात्विक विषाद है वह अर्जुन का है। सात्विक विषाद उसका होने से वह ज्ञान का अधिकारी बन गया ।

"मनन" - वलसाड

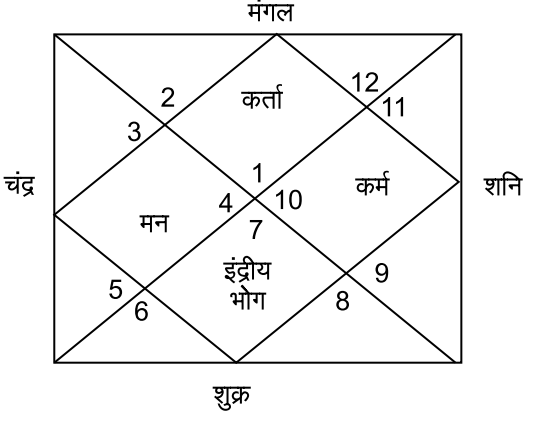

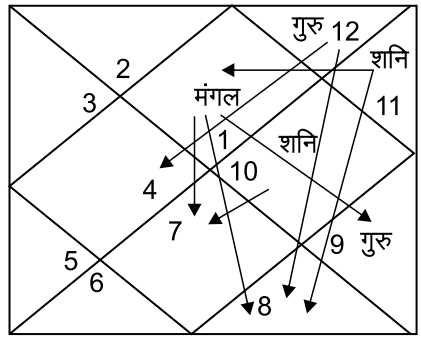

इस जगह पे काल पुरुष कि दो कुंडली रखनी चाहिए (१) एक कुंडली में चारो केन्द्रो में (२) मंगल, गुरु और शनि, बहारीय ग्रहों कि तीन विशेष दृष्टि ईच्छारुपी वृक्ष की उत्पत्ति मनरुपि बीज से होती है। किसी भी विषय का आरंभ मन से होता है और मन जब क्रियाशील हो जाता है तो इंद्रिया सक्रिय हो जाती है। जिनके कारण मनुष्य भोग में लीप्त हो जाता है। भोगो के कारण ही कर्म की श्रृंखला आरंभ हो जाती है।

इस तरह से कर्ता, इंद्रियो और कर्म से बँध जाता है और मनुष्य की जीवन लीला अनवरत चलती रहती है।

कर्ता और कर्म, मन और इंद्रियो पर प्रभाव डाल रहा है अर्थात कर्ता और कर्म ने मन और इंद्रियों पर पूरा नियंत्रण कर लिया है।

इच्छा की उत्पत्ति नहीं होनी और न ही भोगो के प्रति आसक्ती, इसी निरासक्ता स्थिती को गीता में कर्मयोग कहा गया है।

अतः कर्मयोगी के लिए मन स्थिर हो गया, इच्छाओं ने प्रवेश करना बंद कर दिया और भोगो के प्रति आसक्ती भी समाप्त हो गई ।

गुरु धर्म भाव से कर्ता को धर्म अनुसार चलने नियंत्रित करता है। और वही गुरु मोक्ष भाव से मन को धर्म का अनुसरण करके मोक्ष प्राप्ति के लिए प्रेरित करता है। नियंत्रित करता है।

मंगल, गुरु और शनि कि विशेष दृष्टि में ही आरुढ़ लग्न आता है। ३(शनि), ४(मंगल), ५(गुरु) और ९(गुरु), १०(शनि), ११(शनि)। चतुर्थ (४) और अष्टम (८) - माता कि पहली संतान याने चतुरष्ट्र स्थान पर कि पोषण और सुरक्षा के लिए मंगल, गुरु और शनि कि विशेष दृष्टि काल पुरुष कुंडली में आ रही है। इसका मतलब यह है कि गर्भ में बच्चा कहाँ पैदा होगा यह ज्यादातर माँ कि इच्छा पर निर्भर करता हैं।

लग्न (जन्म) और अष्टम (मृत्यु) यह दोनों स्थानो बाहरी ग्रहे याने मंगल, गुरु और शनि कि विशेष दृष्टि प्रभावित कर रही है। ऊर्जा (मंगल), वायु (शनि), ज्ञान (गुरु) बाहर से लेना पड़ता है। सिर्फ शरीर के अंदर पृथ्वी (बुध) २५% और जल (शुक्र, चन्द्र) ७५% से बना हुआ है वो अंदर के ग्रहे है।

सूर्य की किरणों के रंग को सीधे मापने के लिए, एक त्रिकोण कांच को सीधी धूप में रखने से तीन रंगों के रंगो का एक समूह उत्पन्न होगा । लाल (मंगल-उत्पत्ति), पीला (बृहस्पति-स्थिति) और नीला (शनि-लय) - तीनों विशेष बाहरी पहलुओं के साथ - इन तीन रंगों के समूह और संयोजन बैंगनी और हरे और सोने को जन्म देते हैं। ये रंगों के मूल तत्व हैं। भूरा, पीला, नीला, हरा, पीला, नारंगी और लाल - सात रंगों को विबग्योर कहा जाता है।

किशोर पटेल, मुंबई

कई जगह से संकलन किया हुआ यह विश्लेषण है।

VEDIC JYOTISH SANSTHAN

RESULT

VEDIC JYOTISH PRAVESH

No.	Name of the Student	Class	Marks
1	KEDARNATH K MODI	DISTINCTION	77
2	HEMRAJ P ZAWARE	DISTINCTION	75
3	JAYSING A KHAMKAR	DISTINCTION	73
4	MADHAVI V BORHADE	DISTINCTION	72
5	JIGNASHA N PARIKH	FIRST	69
6	JYOTI Y SHAH	FIRST	69
7	MEENAY GOWDA	FIRST	69
8	ANISHA M SONI	FIRST	68
9	SWATANTRAKUMAR MISHRA	FIRST	68
10	VANDANA S MISHRA	FIRST	68
11	JIGNA J VORA	FIRST	67
12	KRUNNAL C PARMAR	FIRST	67
13	GULSHAN D MEHRA	FIRST	66
14	GUNJAN R SACHDEV	FIRST	66
15	HARIOM SUKLA	FIRST	66
16	HEMLATA H MUDLIAR	FIRST	66
17	JATIN E DESAI	FIRST	66
18	VISHAKHA C VADIA	FIRST	66
19	HITESH D JOGI	FIRST	66
20	KAVITA S JAIN	FIRST	65
21	MANJUSHRI A SHARMA	FIRST	65
22	POURUSH B GUTTA	FIRST	65
23	DEVILAL C JAIN	FIRST	64
24	MAHESHKUMAR D PARMAR	FIRST	64
25	MAMTA D KAMDAR	FIRST	64
26	PRITI T VORA	FIRST	64
27	SARIKA R SONI	FIRST	64
28	VINOD RTELI	FIRST	64
29	AJAY S PARMAR	FIRST	63
30	DEVANG B DAMANI	FIRST	63
31	NEELAM B NANDWANA	FIRST	63
32	RAJIV M BANSAL	FIRST	63
33	RINA SHAAH	FIRST	63
34	VIJAYAN NAMBIAR	FIRST	63
35	VINOD KUMARAN	FIRST	63
36	VIRAL B GANDHI	FIRST	63
37	ANITA M DHAKAN	FIRST	62
38	ANKITKUMAR R DIDWANIA	FIRST	62

VEDIC JYOTISH SANSTHAN

RESULT

VEDIC JYOTISH PRAVESH

No.	Name of the Student	Class	Marks
39	BHAVIK J SANCHALA	FIRST	62
40	MOHIT A SHAH	FIRST	62
41	MONA P AGARWAL	FIRST	62
42	NIKHIL J KOTHARI	FIRST	62
43	VIRAL V SHAH	FIRST	62
44	DHANPAL M MANDAWAT	FIRST	61
45	GAURAV A DESAI	FIRST	61
46	HETAL B GOHIL	FIRST	61
47	JITENDRA K PANCHAL	FIRST	61
48	LAXMI K SOLANKI	FIRST	61
49	MAYURIKA A SUKLA	FIRST	61
50	NUTAN1 SHAH	FIRST	61
51	RAJEN R VYAS	FIRST	61
52	KAUSHIK N DAVE	SECOND	59
53	GAURI R VISHWAKARMA	SECOND	58
54	MADHAVI D KAPSE	SECOND	58
55	BHADRESH K SHAH	SECOND	57
56	DEVEN D SHAH	SECOND	57
57	PALAK K SHROFF	SECOND	57
58	CHHAYA V CHHEDA	SECOND	56
59	KALA P JAIN	SECOND	56
60	URMISH P DESAI	SECOND	54
61	SMITA S MER	SECOND	52
62	DISHA D MANDAVIA	SECOND	51
63	AMITA M NAIK	SECOND	50
64	NILAM B SANCHALA	SECOND	48
65	RITA N SHAH	SECOND	48
66	YASHVI PANCHAL	SECOND	47
67	JINESH D KANTHARIA	SECOND	45
68	CHHAYA P SHAH	SECOND	42
69	DHANRAJ P BHADARK	SECOND	42
70	KEVAL H SHAH	SECOND	41
71	JINAL S TRIVEDI	SECOND	39
72	ROHIT R PATHAK	SECOND	38
73	HIMANSHU B VYAS	SECOND	37
74	KANTILAL H PATEL	SECOND	37
75	PREMENDRA P SHARMA	SECOND	36

VEDIC JYOTISH SANSTHAN

RESULT

VEDIC JYOTISH BHUSHAN

No.	Name of the Student	Class	Marks
1	NIRMALA K VYAS	DISTINCTION	79
2	NEETA D MAHYAVANSHI	DISTINCTION	78
3	KHYATI K VORA	DISTINCTION	72
4	KALPITAJ JOSHI	DISTINCTION	71
5	POOJA M VORA	DISTINCTION	71
6	SHEELAVKATHEEH	FIRST	69
7	ANJALI A AMBRE	FIRST	68
8	NEHAM SHAH	FIRST	67
9	SARDA R KUMAVAT	FIRST	67
10	KAVITA K OZA	FIRST	66
11	POO NAM 0 YADAV	FIRST	66
12	RADHESYAM G KUMAVAT	FIRST	66
13	SUJITKUMAR R PANDEY	FIRST	66
14	ALPA R SHAH	FIRST	65
15	AMITA D PAREKH	FIRST	65
16	BHAVIN G SALVI	FIRST	65
17	POOJA M BHAYANI	FIRST	65
18	MAMTA R S HARM A	FIRST	63
19	URVASHI S GAJJAR	FIRST	63
20	AVINASH B BHAGALIA	FIRST	62
21	CHETANA H PARMAR	FIRST	62
22	JAY M JOSHI	FIRST	62
23	SNEHAL V SHAH	FIRST	62
24	SONAL N CHIKANI	FIRST	62
25	DEEPAK N RANE	FIRST	61
26	PRITI F SHAH	FIRST	61
27	RIDDHI S SAVLA	FIRST	61
28	SONAL G JOSHI	FIRST	61
29	TINA J PANDIT	FIRST	61
30	ANAND N DOSHI	SECOND	59
31	HIMANSHU J JOSHI	SECOND	55
32	INDIRA S ACHARYA	SECOND	55
33	HEENAC CHHEDA	SECOND	52
34	KAVITA R SHAH	SECOND	52
35	LATA J JAIN	SECOND	52

VEDIC JYOTISH SANSTHAN

RESULT

VEDIC JYOTISH BHUSHAN

No.	Name of the Student	Class	Marks
36	SONY R CHIMNANI	SECOND	51
37	YOGESH B POPAT	SECOND	51
38	BIMAL P RASPUTRA	SECOND	50
39	GAURANG P TRIVEDI	SECOND	47
40	VIJAY P JAGAD	SECOND	44
41	KRUPALI P YADAV	SECOND	41
42	MEENA N SHAH	SECOND	40
43	SHIVAM H JOSHI	SECOND	40
44	POO NAM G JAIN	SECOND	37
45	MANISH R DEDHIA	SECOND	36

RESULT

VEDIC JYOTISH MARTAND

No.	Name of the Student	Class	Marks
1	NEETA M KHATRI	FIRST	67
2	PRAGNAASHETH	FIRST	65
3	TRISHA R SINGH	FIRST	64
4	PRASHANT D BADHEKA	FIRST	63
5	RAKESH B SAWLANI	FIRST	63
6	MEENAVANAND	SECOND	59
7	INDIRA M GUPTA	SECOND	58
8	JINESH M SHAH	SECOND	57
9	KUDIMAL J MODI	SECOND	51
10	YOGESH U KHATRI	SECOND	51
11	MAITRI R KENIA	SECOND	50
12	SANKET A GARG	SECOND	48
13	AMISH M SHETH	SECOND	47
14	BHAMINI I BHATT	SECOND	46
15	PRAFUL P SETA	SECOND	45
16	BHAGWANDAS N MEHTA	SECOND	44
17	TRUPTI H PAREKH	SECOND	42
18	BINITA P THAKKAR	SECOND	41
19	VARSHA H JOSHI	SECOND	39

VEDIC JYOTISH SANSTHAN

RESULT

VEDIC VASTU PRAVESH

No.	Name of the Student	Class	Marks
1	JAYSING A KHAMKAR	DISTINCTION	73
2	GUNJAN R SACHDEV	DISTINCTION	72
3	MAHESHKUMAR D PARMAR	DISTINCTION	72
4	JATIN E DESAI	DISTINCTION	71
5	JIGNASHA N PARIKH	DISTINCTION	71
6	VIRAL V SHAH	FIRST	69
7	MANJUSHRI A SHARMA	FIRST	69
8	KEDARNATH K MODI	FIRST	68
9	KRUNNAL C PARMAR	FIRST	68
10	KRUPA M UTEKAR	FIRST	68
11	VANDANA S MISHRA	FIRST	68
12	YASHVI PANCHAL	FIRST	68
13	HEENA C CHHEDA	FIRST	67
14	JIGNA J VORA	FIRST	67
15	LAXMI K SOLANKI	FIRST	67
16	DEVANG B DAMANI	FIRST	66
17	DISHA D MANDAVIA	FIRST	66
18	MADHAVI V BORHADE	FIRST	66
19	DAXA V KATELIA	FIRST	65
20	HARIOM SUKLA	FIRST	65
21	NUTANI SHAH	FIRST	65
22	BHAVIN G SALVI	FIRST	64
23	MADHAVI DKAPSE	FIRST	64
24	RAJIV M BANSAL	FIRST	64
25	MONA P AGARWAL	FIRST	64
26	SANSKRUTI S GOLE	FIRST	63
27	SWATANTRAKUMAR MISHRA	FIRST	63
28	URMISH P DESAI	FIRST	63
29	VIJAYAN NAMBIAR	FIRST	63
30	ALKA R VARDE	FIRST	62
31	BHADRESH K SHAH	FIRST	62

VEDIC JYOTISH SANSTHAN

RESULT

VEDIC VASTU PRAVESH

No.	Name of the Student	Class	Marks
32	HETAL B GOHIL	FIRST	62
33	KAUSHIK N DAVE	FIRST	62
34	VINOD RTELI	FIRST	62
35	HEMRAJ P ZAWARE	FIRST	62
36	DHANPAL M MANDAWAT	FIRST	61
37	MAMTA D KAMDAR	FIRST	61
38	SHIVANI R OBEROI	FIRST	61
39	SNEHAL VSHAH	FIRST	61
40	MOHIT A SHAH	FIRST	61
41	NEELAM B NANDWANA	FIRST	61
42	ANITA M DHAKAN	SECOND	59
43	CHHAYAV CHHEDA	SECOND	59
44	DHANRAJ P BHADARK	SECOND	58
45	KANTILAL H PATEL	SECOND	57
46	VINOD KUMARAN	SECOND	57
47	RINA SHAAH	SECOND	55
48	PALAK K SHROFF	SECOND	54
49	SWETA S SHYAMSUNDER	SECOND	54
50	LEENA J RAVANI	SECOND	53
51	SARIKA R SONI	SECOND	53
52	ANKITKUMAR R DIDWANIA	SECOND	51
53	HITESH D JOGI	SECOND	51
54	RAJEN R VYAS	SECOND	44
55	DEVILAL C JAIN	SECOND	41
56	GULSHAN D MEHRA	SECOND	41
57	DEVEN D SHAH	SECOND	36
58	KALA P JAIN	SECOND	36
59	RITA N SHAH	SECOND	36

VEDIC JYOTISH SANSTHAN

RESULT

VEDIC VASTU BHUSHAN

No.	Name of the Student	Class	Marks
1	KHYATI K VORA	DISTINCTION	87
2	NEETA D MAHYAVANSHI	DISTINCTION	73
3	POOJA M BHAYANI	DISTINCTION	72
4	NEHA M SHAH	DISTINCTION	71
5	SONAL G JOSHI	DISTINCTION	71
6	BHAVIN G SALVI	FIRST	65
7	SNEHAL VSHAH	FIRST	64
8	YOGESH B POPAT	FIRST	64
9	ALPA R SHAH	FIRST	62
10	CHETANA H PARMAR	FIRST	61
11	MAMTA R SHARMA	FIRST	61
12	AM IT A D PAREKH	SECOND	57
13	SHARDA R KUMAVAT	SECOND	56
14	KALPITAJ JOSHI	SECOND	54
15	INDIRAS ACHARYA	SECOND	53
16	RADHESYAM G KUMAVAT	SECOND	52
17	SURENDER ARATTI	SECOND	52
18	JAY M JOSHI	SECOND	51
19	SUJITKUMAR R PANDEY	SECOND	51
20	MEENA N SHAH	SECOND	48
21	ANJALI A AMBRE	SECOND	46
22	POONAM 0 YADAV	SECOND	46
23	KAVITA K OZA	SECOND	45
24	KOMAL M JAISWAL	SECOND	45
25	MEETA S SHAH	SECOND	45
26	JINESH D KANTHARIA	SECOND	43
27	PRADNYA N CHAVAN	SECOND	43
28	AVINASH B BHAGALIA	SECOND	42
29	HIMANSHU J JOSHI	SECOND	42
30	SHEELAVKATHEEH	SECOND	38
31	MEENA D PITHAVA	SECOND	36

VEDIC JYOTISH SANSTHAN

RESULT

VEDIC HASTREKHA VIGNAYATA

No.	Name of the Student	Class	Marks
1	VANDANA S MISHRA	DISTINCTION	89
2	KRUNNAL C PARMAR	DISTINCTION	88
3	KAUSHIK N DAVE	DISTINCTION	80
4	VIJAYAN NAMBIAR	DISTINCTION	79
5	KEDARNATH K MODI	DISTINCTION	78
6	MAHESHKUMAR D PARMAR	DISTINCTION	78
7	AJAY S PARMAR	DISTINCTION	74
8	JIGNASHA N PARIKH	DISTINCTION	73
9	VINOD R TELI	DISTINCTION	73
10	VIRAL V SHAH	DISTINCTION	73
11	MEENA Y GOWDA	DISTINCTION	72
12	GUNJAN R SACHDEV	DISTINCTION	71
13	JATIN E DESAI	DISTINCTION	71
14	JINAL S TRIVEDI	DISTINCTION	71
15	URMISH P DESAI	DISTINCTION	71
16	DISHA D MANDAVIA	FIRST	69
17	PRITI T VORA	FIRST	69
18	VINOD KUMARAN	FIRST	69
19	NUTANI SHAH	FIRST	69
20	DEVILAL C JAIN	FIRST	68
21	HETAL B GOHIL	FIRST	68
22	MADHAVI DKAPSE	FIRST	68
23	NEELAM B NANDWANA	FIRST	68
24	SWATANTRAKUMAR MISHRA	FIRST	68
25	MADHAVI V BORHADE	FIRST	67
26	GAURAVA DESAI	FIRST	66
27	SWETA S SHYAMSUNDER	FIRST	66
28	ANITA M DHAKAN	FIRST	65
29	ANKITKUMAR R DIDWANIA	FIRST	65
30	MANJUSHRI A SHARMA	FIRST	65
31	DHANPAL M MANDAWAT	FIRST	64
32	HEM RAJ PZAWARE	FIRST	64
33	JAYSING A KHAMKAR	FIRST	64
34	KAVITA S JAIN	FIRST	64
35	VIRAL B GANDHI	FIRST	64
36	ANISHA M SONI	FIRST	63

VEDIC JYOTISH SANSTHAN

RESULT

VEDIC HASTREKHA VIGNAYATA

No.	Name of the Student	Class	Marks
37	HEMLATAH MUDLIAR	FIRST	63
38	JYOTI Y SHAH	FIRST	63
39	DEVANG B DAMANI	FIRST	62
40	JIGNA J VORA	FIRST	62
41	LAXMI K SOLANKI	FIRST	62
42	MAMTADKAMDAR	FIRST	62
43	SARIKA R SONI	FIRST	62
44	SMITAS MER	FIRST	62
45	AMITA M NAIK	FIRST	61
46	YASHVI PANCHAL	SECOND	58
47	MOHIT A SHAH	SECOND	57
48	RINA SHAAH	SECOND	57
49	PALAK K SHROFF	SECOND	56
50	BHAVIK J SANCHALA	SECOND	55
51	HITESH D JOGI	SECOND	54
52	MAYURIKA A SUKLA	SECOND	54
53	JINESH D KANTHARIA	SECOND	53
54	JITENDRA K PANCHAL	SECOND	52
55	BHADRESH K SHAH	SECOND	51
56	NIKHIL J KOTHARI	SECOND	49
57	RAJEN R VYAS	SECOND	48
58	POURUSH B GUTTA	SECOND	47
59	HARIOM SUKLA	SECOND	45
60	KALA P JAIN	SECOND	44
61	GULSHAN D MEHRA	SECOND	42
62	GAURI R VISHWAKARMA	SECOND	41
63	MONA P AGARWAL	SECOND	41
64	NILAM B SANCHALA	SECOND	41
65	CHHAYA V CHHEDA	SECOND	39
66	DEVEN D SHAH	SECOND	39
67	PAVANKUMAR V SAHAL	SECOND	39
68	HIMANSHU B VYAS	SECOND	38
69	KANTILAL H PATEL	SECOND	37
70	RITA N SHAH	SECOND	37
71	KEVAL H SHAH	SECOND	36
72	PREMENDRA P SHARMA	SECOND	36

VEDIC JYOTISH SANSTHAN

RESULT

VEDIC SWARGYAN GNYATA

No.	Name of the Student	Class	Marks
1	NEETA D MAHYAVANSHI	DISTINCTION	82
2	POOJA M BHAYANI	DISTINCTION	80
3	NEHA M SHAH	DISTINCTION	78
4	NIYATI B MEHTA	DISTINCTION	73
5	NIRMALA K VYAS	DISTINCTION	72
6	SONAL G JOSHI	DISTINCTION	72
7	KHYATI K VORA	DISTINCTION	71
8	CHETANA H PARMAR	FIRST	69
9	RIDDHI S SAVLA	FIRST	69
10	AMITA D PAREKH	FIRST	69
11	ALPA R SHAH	FIRST	68
12	BIMAL P RASPUTRA	FIRST	68
13	KALPITA J JOSHI	FIRST	67
14	MEETA S SHAH	FIRST	67
15	KRUPALI P YADAV	FIRST	66
16	SONAL N CHIKANI	FIRST	66
17	AVINASH B BHAGALIA	FIRST	64
18	MEENA N SHAH	FIRST	64
19	PRITI F SHAH	FIRST	64
20	INDIRAS ACHARYA	FIRST	63
21	HEENAC CHHEDA	FIRST	62
22	SARDA R KUMAVAT	FIRST	62
23	SNEHALVSHAH	FIRST	62
24	BHAVIN G SALVI	FIRST	61
25	HIMANSHU J JOSHI	FIRST	61
26	MAMTA R SHARMA	FIRST	61
27	POOJA M VORA	FIRST	61
28	URVASHI S GAJJAR	FIRST	61
29	MEENA D PITHAVA	SECOND	57
30	YOGESH B POPAT	SECOND	57
31	ANAND N DOSHI	SECOND	56
32	KAVITA K OZA	SECOND	56
33	KAVITA R SHAH	SECOND	56
34	SONY R CHIMNANI	SECOND	54
35	TINA J PANDIT	SECOND	54

VEDIC JYOTISH SANSTHAN

RESULT

VEDIC SWARGYAN GNYATA

No.	*Name of the Student*	*Class*	*Marks*
36	SUJITKUMAR R PANDEY	SECOND	53
37	GAURANG P TRIVEDI	SECOND	52
38	POONAM G JAIN	SECOND	52
39	KOMAL M JAISWAL	SECOND	51
40	RADHESYAM G KUMAVAT	SECOND	51
41	POONAM O YADAV	SECOND	51
42	MANISH R DEDHIA	SECOND	51
43	ANJALI A AMBRE	SECOND	50
44	NARESH P CHHABARIA	SECOND	50
45	JAY M JOSHI	SECOND	48
46	SHEELAVKATHEEH	SECOND	48
47	DEEPAK N RANE	SECOND	47
48	SHIVAM H JOSHI	SECOND	47
49	PRADNYA N CHAVAN	SECOND	45
50	LATA J JAIN	SECOND	40

आकाश दर्शन

आकाश ... कुदरत की दी हुई एक ऐसी उपलब्धि है जिस पर आजकल शायद ही हम ध्यान देते हैं, लेकिन ज्योतिष शास्त्रियों और जिज्ञासाओं के लिए, इस आकाश और उसके पार मौजुद अनंत ब्रह्माण्ड की जानकारी बहुत जरुरी होती है। आज हम एक ऐसे युग में जी रहे हैं जहां "सेटेलाइट", "स्पेस स्टेशन", "स्पेस शटल", जैसी बातें आम होती जा रही हैं, वहीं ... मानव निर्मित प्रदूषण और ऊंची - ऊंची इमारतें हमसे हमारे बचपन के साथी चांद - सितारों से मिलने में बाधा उत्पन्न कर रही हैं।

हम सभी स्कूलों में पढ़ते हैं कि हमारी पृथ्वी सौर मंडल का एक हिस्सा है। यह सौर मंडल एक "गैलेक्सी" मिल्की वे (आकाश गंगा) का एक हिस्सा है और ऐसी अनंत "गैलेक्सी" ब्रह्माण्ड में मौजुद हैं। शैक्षणिक चैनलों पर तो इनकी और जानकारी मिलती है लेकिन कई बार ये सिर्फ वीएफएक्स (VFX) का कमाल ही होता है।

मेरी बचपन से ख्वाहिश थी कि आखिर इस आसमान में जगमगाते सितारे पास से कैसे लगते होंगे ? इच्छा इतनी तिव्र हो गई कि एक बार तो मैंने नेहरु "प्लेनेटोरियम" का शो भी देख लिया लेकिन तसल्ली नहीं हुई। फिर २०२० में मै मेरे पापा के साथ अशोक सर और उनकी संस्था के संपर्क में आया और वो मेरा पहला आकाश दर्शन (तारा दर्शन) था । इसके बाद तो मैं हर साल सर के साथ आकाश दर्शन पर जा रहा हूँ।

इस वर्ष भी हम ६ अप्रैल, २०२४ को दोपहर में हर बार की तरह, आकाश दर्शन के लिए बोरीवली के आनंदीबाई काले कॉलेज के यहाँ जमा हुए। सर ने पहले से ही ऐसी बसों का इंतेजाम कर रखा था। हम लोग अपनी-अपनी बसों में सवार होने लगे । बस में नाश्ते का भी इंतेजाम सर ने और उनकी टीम ने पहले से ही किया हुआ था जब सभी लोग बस में चढ़ चुके थे ... तो हमारा सफर शुरु हुआ। सभी के दिलों में प्रश्न थे कि आखिर इस बार के "आकाश दर्शन में होगा क्या ? क्या नया देखने मिलेगा ? क्या नया सीखने मिलेगा" ?

इस वर्ष का आकाश दर्शन कुछ चुनौतियों से भरा था ... पहले से नियमित मार्ग बंद मिला । हमने डायवर्जन का उपयोग किया जिस कारण हम सूर्यास्त के समय के आस-पास हमारे आकाश दर्शन के स्थान, "कैंप हिप्पी हिल्स" - सूर्या माल वाडा पे पहुँचे .इस लोगों को शंका थी कि कहीं इस देरी के कारण हमने कुछ मिस तो नहीं कर दिया ?

लेकिन सर की एक टीम पहले ही वहाँ पहुंच चुकी थी जिसने टेलिस्कोप सेट कर दिए थे, प्रोजेक्टर भी सेट कर दिया था और साऊंड सिस्टम भी पहले से ही सेट हो चुका था । हमारे लिए वहाँ स्नैक्स का इंतेजाम था। झटपट स्नैक्स लेके हम कुर्सी पर बैठ गए ।

सर की टीम के साथ वहाँ पर खगोल विज्ञान के विशेषज्ञ भी मौजूद थे । उन्होनें हमें पहले तो सूर्यास्त के समय उत्तर दिशा ढूंढना सिखाया फिर हमारे ब्रह्मांड की जानकारी दी ... जैसे-जैसे अंधेरा बढ़ा और रात चढ़ने लगी लाइव स्काई मैप ने उसका एहसास नहीं होने दिया ।

जैसे ही बादल छंट जाते हैं, हमें आकाश में तारों की लाइव स्थिति के द्वारा उनके आकार और नाम बता दिए जाते । देवयानी (एंड्रोमेडा) और ययाति/पर्सियस, मेडुसा की कहानियां बतायी गयीं । धीरे-धीरे दूरबीन पर गुरु (बृहस्पति) और उसके चंद्रमा दिखाये गये, सप्त ऋषि नक्षत्र की जानकारी दी गई हमने Twin Star System "दोहरी तारा प्रणाली" (वरिष्ठ और अरुंधति) को देखा ।

हमने नेबुला देखे, ग्लोबुलर स्टार क्लस्टर देखे । हमने ये जाना कि तारे टूटते नहीं । हमें कैलेंडर सिस्टम पर सारांश में जानकारी मिली । एक मौका ऐसा भी आया जब पहली बार लोगों ने सितारों की रोशनी के ऊपर बादल देखे। ये बादल तारों को छुपा नहीं रहे वे बल्कि उनके पीछे किसी "धुंध या समंदर के होने का एहसास दिला रहे थे ... वो एक मन भावन दृश्य था जिस से नजर हटाने की इच्छा ही नहीं हो रही थी ... तब हमें विशेषज्ञों ने बताया कि यही हमारी आकाश गंगा है जो हमें पृथ्वी पर से दिखायी दे रही है।

हमने जाना कि हमारे पूर्वज जिनके पास ना तो मोबाईल था, ना जीपीएस, वो हमसे भी ज्यादा होशियार थे, और वो कुदरत से जुड़े हुए थे। वो इन्ही आकाश युक्त सितारों के सहारे रास्ते ढूंढते थे, ... दिशाओं का पता लगाते थे और अपनी मंजिल पा जाते थे ।

हमें प्रोजेक्टर पर और भी काफी जानकारी दी गई । हमने टेलीस्कोप से बुध, शुक्र, मंगल, चंद्रमा, देखे । और आखिर में सूर्योदय के समय हमें दर्शन हुए हमारे सौर मंडल के उस अनोखे ग्रह के जिनकी तस्वीरें हमें मंत्रमुग्ध कर देती हैं ... और वह ग्रह था शनि ...

इस साल एक और कमाल की बात देखने को मिली ... सूर्य के उदय होने के साथ-साथ आँखों से किसी तारे के समान दिखाई देने वाला शनि टेलीस्कोप से थोड़ा सा बड़ा दिखाई दे रहा था लेकिन जैसे-जैसे सूर्य की रोशनी और उसकी किरणें आकाश में फैल रही थी, वैसे - वैसे वो तारे जैसा दिखने वाला शनि ग्रह आँखों से ओझल हो गया, और कमाल की बात ये थी कि वो ओझल शनि दूरबीन से काफी देर तक दिखायी दे रहा था। इसके साथ ही मुझे एहसास हुआ कि अस्त का ग्रह कैसा होता है और क्यों ज्योतिष कहते हैं कि यह ग्रह अस्त का है।

लिजिए ... इन सब के बीच में ये बताना तो भूल ही गया कि हमारे लिए रात्रि के भोजन और पूरी रात्रि गरम - गरम चाय का इंतेजाम भी संस्था ने पहले से ही किया था। और वहाँ हमारे लिए टेंट का भी इंतेजाम था, हालांकि सभी को टेंट की जरुरत नहीं पड़ी । क्योंकि ये प्रोग्राम ही समय बीतते - बीतते इतना दिलचस्प होता जा रहा था कि मन, मस्तिष्क और आँखे कह रही थी ... "ओ नींद तू कल आना ।"

कुछ समय के लिए हमने सोलर फिल्टर लगाकर एक टेलीस्कोप में उदय होते सूर्य को भी देखा । इसके साथ ही ओंकार और स्वर्गज्ञान पर जानकारी स्वयं अशोक सर द्वारा दी गई और कार्यक्रम समाप्त हुआ। हमें नाश्ता मिला जो कि लज़ीज था। और हम फिर से बस में बैठ कर फिर बोरीवली की और चल दिये ।

- केदारनाथ कु. मोदी

VEDIC JYOTISH SANSTHAN

आकाश दर्शन की झलकियाँ

આત્મવિશ્વાસ, આત્મસન્માન અને આત્મસંયમ આ ત્રણ વસ્તુઓ જ જીવનને પરમ શક્તિ બનાવે છે.

VEDIC JYOTISH SANSTHAN

YOG DIVAS

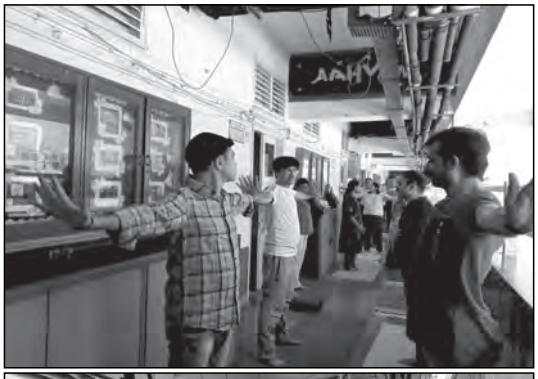

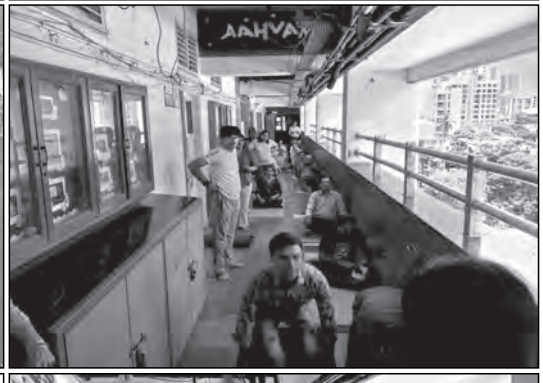

આત્મવિશ્વાસ, આત્મસન્માન અને આત્મસંયમ આ ત્રણ વસ્તુઓ જ જીવનને પરમ શક્તિ બનાવે છે.

VEDIC JYOTISH SANSTHAN

गुरुपुर्णिमा महोत्सव २०२३

गुरुपुर्णिमा महोत्सव २०२३

આત્મવિશ્વાસ, આત્મસન્માન અને આત્મસંયમ આ ત્રણ વસ્તુઓ જ જીવનને પરમ શક્તિ બનાવે છે.

Thank You